टिप्पणी

32

पर्यटन की संभावनाएँ और समस्याएँ

आप जानते ही हैं कि धनी देशों के पर्यटक अपने कार्य करने के समय में खूब मन लगाकर काम करते हैं। उनकी आय अच्छी होती है। जब उनको छुट्टी मिलती है, उनके पास खर्च करने के लिए काफी धन होता है। वे पर्यटन पर धन खर्च करते हैं। इस तरह पर्यटन उद्योग विकास की ओर अग्रसर होता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों से हम विदेशी विनिमय प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त घरेलू दर्शनार्थी अपने भ्रमण एवं ठहरने के दौरान व्यय करते हैं। इस तरह देश में धन की प्राप्ति होती है। इसी धन को पर्यटन के बुनियादी ढ़ांचे के सुधार के लिए खर्च किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप आने वाले पर्यटकों की संख्या में और वृद्धि होती है, ज्यादा रोजगार बढ़ता है, विदेशी विनिमय प्राप्त होता है। इस तरह पर्यटन लोगों को एक दूसरे के समीप लाता है। देश के अंदर क्षेत्रीय विकास इससे बहुत प्रभावित होता है। फलता–फूलता पर्यटन पारम्परिक कौशलों, स्थानीय कला, शिल्प कार्य, लोक कलाकारों की गतिविधियों को बनाये रखता है।

दृष्टिगोचर और अगोचर उत्पादों की अधिक बिक्री के फलस्वरूप क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का पुनर्निमाण काफी बड़े स्तर पर हुआ है।

इस पाठ में हम पर्यटक गतिविधियों की वर्तमान और भावी सम्भावनाओं को कुछ विस्तार में अध्ययन करेंगे। ये गतिविधियाँ भ्रमण एवं पर्यटन उद्योग का निर्माण कर रहीं हैं और लोगों के लिए कई नये व्यवसायों का सृजन भी कर रही है। परन्तु पर्यटकों की विशाल संख्या, जो सिर्फ कुछ प्रसिद्ध स्थानों को ही देखने जाते हैं, उनकी निर्वहन क्षमता से परे चली गई है। इसलिए, हम विशाल या अनियोजित पर्यटन की समस्याओं पर विचार करेंगे और उनके समाधान के उपायों के लिए सम्भावित क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय नीतियों का भी अध्ययन करेंगे।

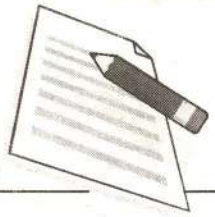

टिप्पणी

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- भारत में पर्यटन की संवृद्धि की विद्यमान स्थिति का मूल्यांकन करते हुए संवर्धनात्मक कार्यक्रम बना सकेंगे;
- क्षेत्र के विकास के लिए सेवा उद्योग के रूप में पर्यटन की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे ;
- अदृश्य निर्यातों की वृद्धि, स्थानीय हस्तशिल्प का विक्रय और लोक कलाकारों की गतिविधियों के जरिये पर्यटन में संवृद्धि, रोजगार एवं आय सृजन का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आने वाले पर्यटकों के समूहों द्वारा प्रस्तुत खतरे के संकेतों को पहचान (यानि नकारात्मक प्रभाव) सकेंगे;
- स्वस्थ लोग और क्षेत्र पारिमित्र पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय व क्षेत्रीय नीतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

32.1 भारत में पर्यटन की रूपरेखा

भारत में पर्यटन के विकास की विद्यमान स्थिति की अन्य देशों से तुलना करके यहां इसकी संभावनाओं को समझना सुविधाजनक बन जाता है। भारत दक्षिण एशिया का भाग है। 1970 के वर्षों से अब तक विश्व के पर्यटन बाजार में बहुत अच्छा नहीं कर पाया है। यहां तक कि दक्षिण एशिया में भी इसका स्थान श्रेष्ठ नही कहा जा सकता है।

हमारे यात्रा एवं पर्यटन उद्योग की प्रगति हो रही है। पर्यटकों का आगमन 2004 में 33.6 लाख तक पहुँच गया है। हांगकांग और सिंगापुर क्षेत्र की दृष्टि से अधिक छोटे हैं, फिर भी पर्यटन उद्योग में हमसे काफी आगे हैं। वर्तमान समय में विश्व का प्रत्येक दसवां व्यक्ति यात्री हैं। वैश्वीकरण के साथ यात्रियों की संख्या बढ़कर इस शताब्दी के प्रारंभ में 80 करोड़ तक पहुँच गई हैं। फिर भी विश्व के कुल यात्रियों की संख्या में आधे प्रतिशत से भी कम यात्री भारतीय हैं।

हमारे अपने स्तर पर, 1951 में मात्र 17000 विदेशी पर्यटकों से 2004 में 33 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक का हो जाना विशाल वृद्धि दर्शाता है। पर्यटन मुख्य आर्थिक गतिविधि के रूप में है। इससे भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद में 5.3% का योगदान अपेक्षित है। पर्यटकों के आने की संख्या के आधार पर भारत विश्व में पांचवें स्थान पर है जबकि पहले इसका स्थान 35वां था। हमारे बुनियादी ढांचे में सुधार के फलस्वरूप वर्ष 2007 तक पर्यटक आगमन बढ़कर 45.5 लाख हो जाने की आशा है। इस तरह

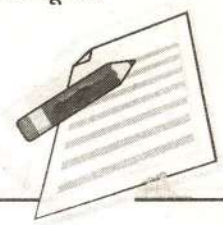

टिप्पणी

हमारी वार्षिक वृद्धि दर 2002–04 में 7.8% प्रतिशत की तुलना में 2003–07 में 13. 7 प्रतिशत होगी। इसके विपरीत, यात्रा एवं पर्यटन में रोजगार का हमारा हिस्सा दक्षिण एशिया और विश्व दोनों से निम्न है। विश्व में 7.8% लोग यात्रा एवं पर्यटन से अपनी जीविका चला रहे हैं जबकि भारत में यह मात्रा 2.60 ही है।

भारत की तुलना में सिंगापुर का क्षेत्रफल (मात्र 1000 वर्ग कि.मी.) बहुत ही कम है। सिंगापुर ज्यादा खर्चीला है। अतः वहाँ पर्यटक छः दिनों से ज्यादा नहीं रूकते जबकि भारत का आकार विशाल है। जीवन निर्वाहन की लागत कम है। अतएव भारत में पर्यटकों का ठहराव काफी लम्बा होता है।

देश के अंदर ही 1996 में देशी पर्यटकों की संख्या 23 लाख (15 लाख तीर्थयात्री समेत) से बढ़कर 2004 में पंजीकृत श्रेणी में 35 लाख (लगभग 19 लाख तीर्थ यात्री समेत) तक हो गई है। हमारे तीर्थ यात्रियों का कोई यथार्थ अनुमान अब तक नहीं लगाया जा सकता है। परन्तु वर्ष 2004 में पिछले वर्ष की तुलना में देशी और विदेशी, दोनों पर्यटकों के आगमन में 23.5% की वृद्धि देखी गई है।

यह ध्यान देने की बात है कि देश में किसी संकट से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन अत्यधिक प्रभावित होता है। अतः आने वाले पर्यटकों की संख्या में तत्काल तीव्र गिरावट आ जाती है। परन्तु तीर्थ यात्रा पर्यटन विरले ही प्रभावित होती है। भक्तगण यात्रा में किसी जोखिम पर ध्यान दिये बिना अपनी निश्चित अनुसूची का पालन करते हैं। यही कारण है कि पिछले वर्ष की तुलना में 43% ज्यादा अर्थात् 200 रुपये करोड़ देशी पर्यटक गंतव्यों स्थलों की देखभाल करने के लिए अलग से प्रदान किये गये हैं।

विदेशी विनिमय उपार्जन

हम अपने विदेशी विनिमय का अच्छा खासा भाग यूरोपीय देशों से आने वाले यात्रियों के खर्च करने से कमाते हैं। ये समस्त पर्यटकों के खर्च का लगभग 50% होता है।

व्यावहारिक रूप से भारत का कुल विदेशी विनिमय उपार्जन 2004 में बढ़कर 4.122 अरब यू एस डालर था। यह पिछले दशक से 1.36 अरब डालरों की वृद्धि है। पर्यटन से विश्व का विदेशी विनिमय उपार्जन बढ़ा है, परन्तु साथ ही उसका साथ अन्य स्रोतों से भी विदेशी विनिमय उपार्जन में वृद्धि हुई है। फलस्वरूप कुल योग में पर्यटन का हिस्सा (प्रतिशत) 2004 के लगभग ही रहा।

32.2 पर्यटन तब और अब

सर्वप्रथम साठ के दशक के प्रारंभ में, भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजना में पर्यटन का उल्लेख किया गया था। जिन स्थानों पर विदेशी पर्यटक अक्सर आते थे, उन स्थानों पर भारतीय सरकार ने सुविधाओं के विकास के लिए योजना बनाई। राज्य सरकारों से कहा गया कि जिन स्थानों पर देशी पर्यटक अक्सर आते हैं, उन स्थानों पर मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के देशी पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करें। 1980 के प्रारंभ.

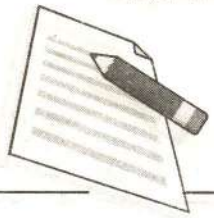

टिप्पणी

में, यह महसूस किया गया कि पर्यटकों के आवास की भावी आवश्यकताओं का सही–सही अनुमान लगाया जाये और दर्शनार्थियों की संख्या में वृद्धि को देखते हुए पर्यावरण की भी सुरक्षा की जाये।

यह 1985–90 का योजनाकाल था, जिसमें अनेक राज्यों द्वारा पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया। पर्यटन को बढ़ावा देने से हस्तशिल्प की बिक्री के लिए नया मंच मिला। उपयुक्त विशेष क्षेत्रों में सर्किट टूर यात्रा संगठित करना महत्वपूर्ण समझा गया।

इस योजना काल के बाद निम्नलिखित पर जोर दिया गया है :

(i) पर्यटन की गतिविधियों के जरिये रोजगार का सृजन;

(ii) पर्यटन विकास के लिए निजी तथा सम्भवतः विदेशी पूंजी आमंत्रित करना;

(iii) राज्यों के बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए 15 या 20 वर्षीय योजना बनाना;

(iv) विकास के लिए संबंधित सरकारी विभागों तथा अन्य एजेंसियों के बीच समन्वय बढ़ाना।

नौवें योजना काल में, अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की सहायता में देशी पर्यटन का विकास करना आवश्यक समझा गया। सम्पूर्ण भारत से 21 तीर्थ नगरों की सूची बनाई गई जिससे देश के भिन्न–भिन्न भागों से आने वाले बड़ी संख्या में निम्न बजट के लोगों के लिए सुविधायें प्रदान की जा सके।

पर्यटन के लिए बजट आवंटन, 1990–95 में 364.61 करोड़ रुपयों से बढ़ाकर 2005–06 में उससे लगभग दुगना, 786 करोड़ रुपये कर दिया गया। इसके अतिरिक्त निजी सहायता की व्यवस्था भी की गयी। उसके विकास का तत्कालीन चरण जानने के लिए, पर्यटन हेतु केन्द्रीय सरकार के बजट आवंटन का निम्नलिखित पृथक्करण दिया गया है।

निवेश (करोड़ रु. में)

(i)	भारत के पर्यटन संबंधी बुनियादी ढांचे का सुधार	350/-
(ii)	विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए **'अतुल्य भारत'** नामक शीर्षक के अंतर्गत विज्ञापन द्वारा प्रचारित करने के लिए	140/-
(iii)	देशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए **अतिथि देवोभवः** शीर्षक द्वारा प्रचार।	70/-
(iv)	पर्यटक सेवा जैसे टैक्सी, रेलगाड़ी के डब्बे, गाईड, भ्रमण प्रचालक, ड्राइवरों का सुधार और अन्य मानव संसाधन विकास।	226/-
	कुल योग	**226/-**

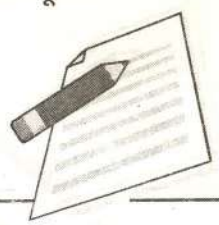

टिप्पणी

उपर्युक्त बजट का विवरण स्वयं स्पष्ट है।

- भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन की संख्या 2004 में 30 लाख के आंकड़ों को पार कर लिया है। विदेशी विनिमय द्वारा कमाई वर्ष 2004 वर्ष में ही 4.12 अरब यू.एस. डॉलर तक पहुँच गई है।
- द्वितीय पंचवर्षीय योजना से भारत पर्यटन के सभी पहलुओं को विकसित करने के कई सोपानों को तीव्रता से जोड़ता गया है। उसे आधुनिक समय की मुख्य आर्थिक गतिविधियों के लिए अधिक बजट प्रदान किया गया है ताकि पर्यटन का समस्त लाभ प्राप्त हो सके।
- पर्यटक गंतव्यों के आधार पर भारत विश्व में 35 वें स्थान से चोटी के 5वें स्थान तक पहुँच गया है। पर्यटन उद्योग ने हमारे सकल घरेलू उत्पाद में 5.3% का योगदान दिया है।

पाठगत प्रश्न 32.1

1. पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिलने के बाद जोर दिये जाने वाले चार पहलुओं का नाम बताइये।

2. भारत मुश्किल से अपने विदेशी विनिमय उपार्जन का मात्र एक प्रतिशत पर्यटन से प्राप्त कर रहा है, इसके मुख्य क्या कारण हैं ?

32.3 पर्यटन सेवा उद्योग : अभिप्राय एवं प्रभाव

पर्यटन असाधरण प्रकार का अत्याधिक श्रम–साध्य उद्योग है। यह आनेवाले पर्यटकों को आवश्यक और उनके द्वारा अपेक्षित भिन्न सेवायें प्रदान करता है। वैश्विक स्तर पर पर्यटक विभिन्न देशों में जाते हैं। वहाँ पर उनका धन व्यय होता है। अतः उनके द्वारा धन व्यय करने के आधार पर पर्यटन उद्योग बड़े व्यवसायों में एक है। केवल अमेरिका को छोड़कर इस पर व्यय किये गये धन की मात्रा अन्य किसी भी देशों के सकल राष्ट्रीय उत्पाद से भी अधिक होता है।

विश्व भ्रमण एवं पर्यटन परिषद के नवीनतम अनुमानों के अनुसार, इस उद्योग द्वारा भारत के कुल रोजगार का लगभग 6 प्रतिशत सृजित करना अपेक्षित है।

वर्ष 2004 में लगभग 1 करोड़ 15 लाख व्यक्ति, हमारे श्रम शक्ति का 2.4% पर्यटन

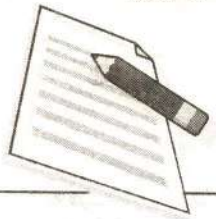

टिप्पणी

उद्योग से संबंधित सत्कारशील सेवाओं में लगे हुए हैं। ये कार्यकर्त्ता होटलों, रेस्तरां, मधुशालाओं, लोकप्रिय मुख्य मार्गों पर पर्यटकों के लिए परिवहन सेवाओं और पर्यटक स्थलों पर उपहार या स्मृति चिन्ह दुकानों में नियुक्त हैं। प्रत्यक्ष रूप से नियुक्त कार्यकर्ताओं का बड़ा भाग आहार व्यवस्था, आवास के सारे मामलों और मेजबान देश में पर्यटकों के लिए भिन्न प्रकार के परिवहन की देखभाल करता है।

अप्रत्यक्ष रूप से 1 करोड़ 30 लाख से ज्यादा लोग आंशिक या पूर्णकालिक रूप से इस उद्योग में लगे हुए हैं। ये लोग भिन्न प्रकार की सेवाओं और गौण उद्योगों में कार्य कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, इस उद्योग में 100 कार्यकर्त्ताओं में से 47 प्रत्यक्ष रूप से होटलों में पर्यटकों की सेवा करते हैं और 53 अप्रत्यक्ष रूप से संगठनों के जरिये काम में लगे हुए हैं या पर्यटक क्षेत्रों में स्व रोजगार में युक्त होकर इस उद्योग की सेवा कर रहे हैं। इन सबके आर्थिक प्रभाववश वर्ष 2014 तक लगभग 2 करोड़ 80 लाख नौकरियों का सृजन अपेक्षित है। भ्रमण एवं पर्यटन की बढ़ती हुए मांग के आधार पर यह 2004 में कुल आय की तुलना में ढाई गुना से ज्यादा होने की उम्मीद है। प्रत्यक्ष पर्यटन क्षेत्र से बाहर, अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध नौकरियां कोई कम लाभकारी नहीं हैं। स्थानीय क्षेत्रों में टैक्सी या आरामदेय गाड़ियां चलाना, गाइड या दुभाषिया की व्यवस्था, लोक कलाकारों, शिल्प विक्रेता, अन्य वित्तीय सेवा, विनिमय, खेलों और फोटो खींचने के लिए सामान की आपूर्ति करना आदि से संबंधित हैं। अतिरिक्त नौकरियां, लौंड्री और सिर्फ पर्यटकों को माल बेचने वाली दुकानों, प्रसाधन वस्तुओं या कॉस्मेटिक वस्तुओं में भी उपलब्ध होती है।

यह कहना उचित है कि पर्यटन न तो अकेला और न ही विशिष्ट प्रकार का विशेष स्थल पर स्थित उद्योग होता है। यह मेजबान की सेवाओं का समग्र होता है। यह किसी भी माध्यम के जरिये पर्यटक द्वारा पर्यटन के बारे में जानकारी इकट्ठा करने से ही प्रारंभ हो जाता है। प्रचार सेवायें मेजबान देश के टुअर प्रचालकों द्वारा चलाई जाती हैं। इससे पर्यटकों को अपने पसंद के स्थानों पर जाने की योजना तैयार करने में मदद मिलती है। प्रशिक्षित प्रधान रसोइया और अन्य पेशेवर होटलों में पर्यटकों की निवास के दौरान सुविधा की देखभाल करते हैं। मार्गदर्शन की सेवायें पर्यटक स्थलों को दिखाने की जिम्मेदारी निभाती हैं। ग्राहक सेवा के रूप में विक्रय कला कोई कम महत्व की नहीं है। यह सेवा दुकानों की श्रृंखला के जरिये प्रदान की जाती है। इसके अंतर्गत जेवर, कपड़े, साज सज्जा या सजावटी कलात्मक वस्तुएं इत्यादि आती हैं जिसे पर्यटक उपहार या अपने उपयोग के लिए खरीदता है।

बहुमुखी सेवा उद्योगों का ऐसा विकास बहुत कम लागत वाला है और आर्थिक गतिविधि के रूप में संचालित करने में बहुत आसान हैं। ऐसे उद्योग के संचालन के लिए सर्वाधिक बड़ा संसाधन मानवीय पटुता और सृजनात्मक कौशल है। इसकी तुलना में कृषि या निर्माण द्वारा क्षेत्र के विकास के लिए बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है।

समय के साथ, पर्यटन को जिन बुनियादी ढांचों की आवश्यकता होती हैं, उसके विकास में वह स्वतः योगदान देने लगता है। परिवहन के साधन संचार तंत्र, बिजली की लाइनें,

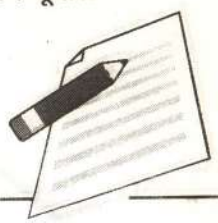

टिप्पणी

जनरेटर सेट, ट्रांसफॉर्मर या जल भंडारण टैंक इत्यादि स्थानीय पर्यटक क्षेत्र के भीतर विकसित होने लगते हैं।

उद्योग के रूप में पर्यटन एक ओर पर्यटकों को आकर्षित करते हुए अपनी मांग उत्पन्न करता है। दूसरी ओर वह अन्य कई उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करने लगता है। पर्यटन की बढ़जी हुए मांग से कृषि, निर्माण उद्योग, सड़क व इमारत निर्माण कार्य इत्यादि को बढ़ाता मिलता है। किसी क्षेत्र में होटल और मोटलों का ज्यादा खुलने का अर्थ है एक के बाद एक अंतः संबंधित सेवा उद्योगों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि। पुराने स्मारकों को देखने जाना, ऐतिहासिक महत्व की मशीन (इंजन) का निर्माण करना भी आज विरासत उद्योग के अंतर्गत आता है। यह नाम उपयुक्त है क्योंकि हम इससे वैसे ही उर्पाजन करते हैं, जैसे हम किसी भी अन्य औद्योगिक उत्पाद की बिक्री से करते हैं।

यह विज्ञापन ब्यूरो और दृश्य मीडिया के कार्य के अवसरों को विस्तृत करता है। साथ ही ज्यादा संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए सरकारी पर्यटन विभाग की मदद करता है। उस क्षेत्र के लोगों के लिये अतिरिक्त आय एवं नौकरी के नये साधनों को सृजित करते हैं। ये दोनों ही परिणाम उस क्षेत्र के विकास के कारक बन जाते हैं।

एक अनुमान के अनुसार, देशी पर्यटन के विकास के लिए सामान्यतया 10 लाख रुपये का विनियोग अकेले होटल क्षेत्र में 89 नौकरियां सृजित करता है। इसकी तुलना में इतनी ही लागत कृषि क्षेत्र में सिर्फ 45 रोजगार और औद्योगिक निर्माण क्षेत्र में 13 रोजगार उत्पन्न करता है।

जब पर्यटक सेवाओं के तन्त्र का विकास होता है, तो स्व नियुक्त लोगों की संख्या बढ़ जाती है। इसके लिए सामयिक या मौसमी रोजगार वितरण पर्यटक रूचि के स्थानों के आसपास के समस्त क्षेत्र में व्यापक हो जाता है। इसकी तुलना में भ्रमण एवं पर्यटन में हो रही वृद्धि दो गुनी तेज है। प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में विश्व की सर्वाधिक आर्थिक वृद्धि हो रही है। अब हमारा ध्यान इस ओर चला गया है। उसकी सराहनीय वृद्धि भारत से अब ज्यादा दूर नहीं है। यह अकाट्य तथ्य है कि पर्यटन क्षेत्र में अकेले 10 लाख नियमित नौकरियां इतनी वित्तीय आय सृजित करती हैं कि भारत के मंहगे पेट्रोलियम उत्पादों के पूरे वर्ष भर के बिल की 40% अदायगी कर सकती है। पर्यटन से विदेश विनिमय उपार्जन इस बिल का अतिरिक्त भुगतान करेगा।

- आर्थिक गतिविधि के रूप में, आधुनिक पर्यटन की व्यापारिक प्रकृति ने उसे सेवा उद्योगों के अंतःसंबंधित समूह में रूपान्तरित कर और भी विस्तारित किया है।
- वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, आकस्मिक एवं नियमित नौकरियां प्रदान करते हैं। होटलों और इससे जुड़े क्षेत्रों और स्व नियुक्त लोगों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। अतः ये सभी एक दूसरे की वृद्धि की बुनियाद रखते हैं।

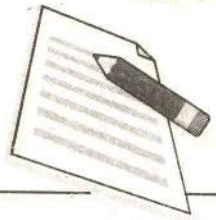

टिप्पणी

32.4 अदृश्य निर्यात

भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों को प्रदान की जा रही सेवायें पर्यटक उद्योग के अदृश्य उत्पाद हैं। यह उत्पाद, यानि, पर्यटकों के लिये सभी प्रकार की आतिथ्य–सत्कार सेवायें अदृश्य निर्यात बन जाते है, क्योंकि ये भारतीय संस्कृति की अमिट छाप होती है। जितना ज्यादा विदेशी विनिमय उपार्जित होगा उतना अधिक लाभ होता है। इसी तरह से विदेशों से जितनी ज्यादा संख्या में आगन्तुक आते हैं, उतना ज्यादा हमारा विदेशी विनिमय उपार्जन होता है। मेजबन देश को सिर्फ दर्शनार्थियों को भी संभावित सुविधायें प्रदान करना होता है। इससे और वे होटलों में जितना संभव हो होटलों में अधिक समय तक छुट्टी मनाने के मूड में बने रहते हैं। जितना लंबे समय के लिये रहेंगे, उतना ज्यादा धन व्यय करेंगे और इस तरह हमारी आय बढ़ती है।

पर्यटकों के लिये हमारी सेवायें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कहीं भी निश्चित वस्तुओं के रूप में प्रगट नहीं हो रही हैं। हम उनसे नकद पाने में उसी तरह सफल होते हैं जैसे अन्य वस्तुओं के निर्यात से प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही साथ सृजनात्मक मदें जैसे कलात्मक चीजें, देशी डिजाइनों में वस्त्र और कालीन जैसी भारी वस्तुएं और भी काफी कुछ दर्शनार्थी पसन्द किये बिना नहीं रहते हैं। भारत में उनकी बिकी ही अतिरिक्त फायदा है। उसी उत्पाद को एजेन्ट के जरिये निर्यात करने से हमारा लाभ कम हो जाता है।

किसी देश का जितना विदेशी व्यापार होगा, उतना ही पर्यटकों की संख्या अधिक होगी और अक्सर पेशेवर और व्यापारिक उद्यमकर्त्ता बड़ी संख्या में आते हैं। इसने हमारे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया है। भ्रमण पर्यटन अपना खुद का बाजार सृजित करता है क्योंकि बहुत से पर्यटक स्वयं ही व्यापारी होते हैं। विदेशी पर्यटकों द्वारा भारत में व्यय किया गया धन, प्रतिकूल भुगतान संतुलन की स्थिति के कारण हानि की क्षतिपूर्ति करता है। हमारी पर्यटक सेवाओं के रूप में निर्यात वर्ष 2004 में 1.3% हो गया। जबकि यह वर्ष 1990 में मात्र 0.6% था। एशिया और अफ्रीका के अधिकांश विकासोन्मुख देशों के बीच हम विश्व में द्वितीय सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रही पर्यटन अर्थव्यवस्था बन गये हैं।

रेडीमेड वस्त्रों, नगीनों और जेवरात के बाद आय उपार्जन के संबंध में पर्यटन हमारा सर्वाधिक बड़ा निर्यात है। जेवरात इत्यादि 75% आयतित अंश है। हमारे समुद्रपार प्रचार ब्यूरो द्वारा पर्यटन के संवर्धन पर 7% से कम खर्च किया जाता है। यह स्पष्ट रूप से पर्यटन में उपार्जित प्रत्येक डालर का 93% अंश विदेशी मुद्रा के तौर पर प्राप्त होता है।

- विदेशी पर्यटकों को भारत में उनके ठहरने के दौरान जो सेवा प्रदान की जाती हैं वे एक तरह से पर्यटक उद्योग के अदृश्य उत्पाद और निर्यात हैं।
- विदेश जाने वाले भारतीय नागरिक द्वारा विदेशों में प्राप्त सेवायें हमारे आयात की गैर–भौतिक मदें हैं।

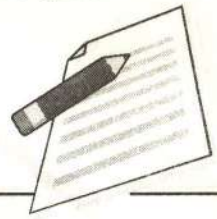

टिप्पणी

- भारत में पर्यटन उद्योग, हमारे विदेशी विनियम उपार्जन में तीसरा सर्वाधिक बड़े हिस्सों के लिये जिम्मेदार है। यह आयातित पेट्रोल और पेट्रोलियम उत्पादों को हमारे वार्षिक बिल का 40% भुगतान कर सकता है।

32.5 अल्पविकसित क्षेत्रों का विकास

भारत के निर्यात उद्योग की तरह विदेशी आगन्तुकों का हमारे देश में भ्रमण पर्यटन के विकास का आधार है। यात्रियों को उत्पादों और सेवाओं की बिक्री के द्वारा आर्थिक गतिविधि का स्तर बढ़ता है। वृहत स्तर पर प्रत्येक स्थानीय क्षेत्र अपने हस्तशिल्पकला की किसी वस्तु के लिये प्रसिद्ध होता है जो पर्यटकों का ध्यान खींच लेता है। जितनी ज्यादा संख्या आगन्तुकों की होती है, उतना ही ऐसी विविध वस्तुओं की बिक्री के लिये मांग अधिक होती है। अतः यह स्थानीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करती है। यह लाभ देश के अन्दर तुलनात्मक रूप से अल्पविकसित क्षेत्रों के लिये विशेष लाभकारी होता हैं।

गैर–औद्योगिक या आंशिक रूप से औद्योगिक क्षेत्रों में काश्तकारों की जनसंख्या अधिक होती है जो जीवन निर्वाह स्तर की खेती करते हैं। वहां वैकल्पिक संसाधनों का सामान्य रूप से अभाव होता है। जिससे के इस प्रकार के क्षेत्रों में उत्पादक आर्थिक गतिविधि की कमी होती है। ऐसे क्षेत्र भारत के चारों ओर विभिन्न आकारों में फैले है।

विदेशी पर्यटकों द्वारा उनके ठहरने के दौरान व्यय किए गए धन की मात्रा का कुछ भाग स्थानीय निवासियों की आय के प्रत्यक्ष स्रोत है। आगन्तुकों द्वारा व्यापारिक लोगों को अदा किया गया पैसा, उनकी सेवाओं के लिये कार्य कर रहे कार्यकर्त्ताओं की मजदूरी बन जाता है।

पर्यटन का विकास युवा बेरोजगार लोगों को कम से कम मौसमी रोजगार प्रदान करता है। स्त्रियों तथा बुजुर्ग लोगों को गौण रोजगार प्रदान करता है। हस्तशिल्प कला का पुनरूत्थान होता है। घरेलू स्तर पर ऐसी वस्तुओं की सूची बहुत लम्बी है। बहुत साधारण दिखाई पड़ने वाली वस्तुएं भी पर्यटकों में रूचि जगाती है। यह वस्तुएं पर्यटक बाजारों में, अच्छे लाभांश पर, तेजी से बिकती है।

इन क्षेत्रों से युवाजन सामान्यतः नौकरी की तलाश में शहरी केन्द्रों की ओर आ जाते हैं। सम्योपरि, स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं की बिक्री और आने वाले पर्यटकों की सेवाओं के लिये सृजित नौकरियां, अल्पविकसित स्थानों से युवा के प्रवाह को रोकती है। पर्यटन विनियोजकों, भूस्वामियों और बैंकों के लिये आय के नये स्त्रोत सृजित करता है। यह सरकार के लिये ज्यादा करों की गुंजाइश में वृद्धि करता है। यह तीव्र गति से होता है जब पर्यटन सैरगाहों (रिजोर्ट) का नवीकरण या इमारत निर्माण के प्रोजेक्ट शुरु किये जाते हैं। सर्वाजनिक एवं निजी, दोनों स्त्रोतों से पैसा आने लगता है। बैंक ऐसे जोखिम कार्य करने के लिये ऋण में वृद्धि करने का निर्णय

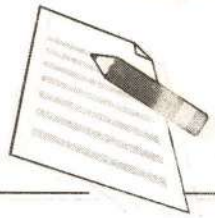

टिप्पणी

कर सकते हैं। यह धन या पूंजी संसाधन पहले कुछ अत्याधिक औद्योगिक क्षेत्रों में केन्द्रित थे। इस तरह वे अल्पविकसित क्षेत्रों की ओर हस्तान्तरित होना शुरू हो जाता हैं।

अर्थव्यवस्था का विकास मनोरंजन पर्यटन, द्वारा राष्ट्रीस्तर से निम्न क्रम के क्षेत्रों और स्थानीय स्तरों तक पहुंचने लगता है। यह प्रवृत्ति दीर्घकाल में विकास के क्षेत्रीय असंतुलन को काफी हद तक ठीक करती है।

- आय और नौकरियों के नये स्त्रोतों का सृजन पर्यटन उद्योग के सामान्य फायदे हैं। परन्तु यह स्थानीय अर्थव्यवस्था की क्षमता बढ़ाने और देश के अल्पविकसित क्षेत्रों में कई तरह से जीवन की गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने में विशेष भूमिका भी अदा करता है।

पाठगत प्रश्न 32.2

1. पर्यटन के द्वारा अदृश्य निर्यातों के दो प्रकार के नाम बताएं।
2. अंतर्राष्ट्रीय और देशी पर्यटकों में से, विदेशी विनिमय कौन प्रदान करते हैं।
3. तटीय क्षेत्रों में पर्यटन किस तरह से जीवन की गुणवत्ता को ऊँचा करता है?
4. अल्पविकसित क्षेत्रों को विकसित करने के तीन वैकल्पिक संसाधन क्या हैं?
5. पर्यटन किस लिये सेवा उद्योग कहलाता है?
6. 'विरासत उद्योग' में समाविष्ट तीन चीजों के नाम बताएं।

32.6 जन पर्यटन की समस्याएं

हम निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत इन समस्याओं की चर्चा करेंगे:

(क) पर्यावरण पर प्रभाव

(ख) स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

(ग) स्थानीय संस्कृतियों पर प्रभाव

(क) पर्यावरण पर प्रभाव

पर्यावरण तब तक पर्यटकों के आकर्षण का स्त्रोत बना रहता है जब तक उसका क्षति निरोधन किया जा सके। पर्यटन के नुकसानदेय प्रभाव से उसके सभी घटकों की सुरक्षा करने की आवश्यकता है।

टट्टू या मानवीय आवागमन द्वारा उनके पैरों के असहनीय दबाव से मृदा के कण ठोस

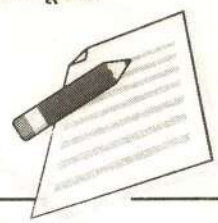

टिप्पणी

हो जाते हैं या स्थानों से हटा दिये जाते हैं। बोझिल वाहनीय आवागमन से सभी क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। सड़क या पर्यटन पगडंडियों पर लीक बना देता है। ठोस मिट्टी पर बनी लीक पर पानी का बहाव या बर्फ का पिघलाव बढ़ जाता है। जंगल के रास्तों और पहाड़ी ढ़लानों पर से उपयोगी ऊपरी मृदा की क्षति पर्यटकों को उदासीन बना देती है। पर्यटन क्षेत्र में पानी का अत्याधिक अपवाह सड़कों और इमारतों को भी हानि पहुँचा सकता है। गैर–अवक्रमणीय पदार्थों जैसे प्लास्टिक, टीन या रासायनिक प्रदूषकों का कूड़ा–करकट चारों ओर विखरा हुआ है। यहाँ तक कि महत्वपूर्ण मौसमी शिविर मैदानों में भी बिखरा हुआ कूड़ा पाया जाता है। सामान्य पर्यटकों और पैदल यात्रियों को भी अपने आगे एवं गंतव्य स्थानों को स्वच्छ रखने के लिए कहने की आवश्यकता है। किसी भी खुले स्थान पर पर्यटकों की असंचालनीय भीड़ घास को नष्ट कर देती है। सख्त एवं कम वांछनीय प्रजाति के घास व पौधे मूल वनस्पति आवरण का स्थान लेने लगते हैं।

संयुक्त राष्ट्र की नवीन पारिस्थितिकी मूल्यांकन रिपोर्ट में कहा गया है कि सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप जैव–विविधता में गिरावट आ रही है। वन्य पशु और पक्षी मानव से बचने के लिये हमेशा वे स्थान छोड़ देते हैं। उनके लिये यदि भागना संभव नहीं होता है, तो वे मर भी सकते हैं। भू–आश्रय की हानि, जल की खराब गुणवत्ता, आर्द्रभूमियों से सिल्ट बाहर निकालना, आर्द्रभूमि में सिल्ट का भराव और अत्याधिक शोर वन्य जीवन को परेशान करता है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, "संस्कृति और सभ्यता के बावजूद किसी भी तथाकथित वन्य पशुओं की तुलना में मानव ज्यादा जंगली और खतरनाक बना हुआ है।"

निर्धन लोग भी अपनी विवशताओं के कारण बीहड़ स्थान को हड़प लेते हैं। वन्य पशुओं को जीवित रखने के लिये उन्हें अब कई वन विहारों में परिरक्षित किया जा रहा है। परन्तु, उनके अंदरूनी क्षेत्रों में विकासात्मक कार्य से सम्बंधित रिपोर्ट के अनुसार यह वन्य जीवन के संरक्षण के लिये प्रतिकूल है। उदाहरण के लिये मेलघाट, महाराष्ट्र में मेलघाट नामक प्रमुख बाघ रक्षित क्षेत्र है। गांवों को उसके अंदरूनी हिस्से से दूर पुनः स्थापित करना चाहिए। परन्तु इसके बदले वहाँ सड़कों का निर्माण किया गया है। सख्त गर्मी के मौसम में उन सड़कों पर चलने के कारण अक्सर बाघों के पैर जल जाते हैं। बाघ क्योंकि सामाजिक प्राणी नहीं है, वे गाड़ियों के शोर से परेशान होते हैं। सड़कों की वजह से शिकारियों को वहाँ पहुँचने में आसानी होती है।

अच्छी गुणवत्ता और पर्याप्त मात्रा में जल पर्यटन उद्योग को जीवित रखने में समान रूप से आवश्यक है। पानी का उपयोग पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ बढ़ता जा रहा है जैस कपड़े धोने, पीने, नाले की साफ–सफाई, तैरने के लिए स्वच्छ जल आदि। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में पानी की कमी और प्रदूषण अस्वच्छ स्थितियों को और खराब करता है और बीमारियों को बढ़ाता है। पर्यटक स्थलों पर दर्शनार्थियों का अनियंत्रित आगमन पर्यटकों को इतना दुष्प्रभावित करता है कि वे अगली बार इससे दूर रहने का निर्णय कर सकते हैं।

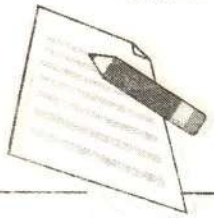

टिप्पणी

किसी भी विकासी गतिविधि के कारण लम्बे समय तक पड़ा मलबा, रसोई की गंदगी, कूड़ा, भूमि भराव, वितरित ईंधन पर्यटकों में विकर्षण पैदा करता हैं। रेस्तरां में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिये प्रदूषित जल कुंडों में बड़ी तादाद में मछली पालन को हानि उठानी पड़ती है।

यह एक यक्ष प्रश्न है कि यदि पर्यावरण का संरक्षण नहीं किया जाता, तो इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में होने वाले प्रतिकूल परिवर्तनों के प्रति पर्यटन उद्योग कितना संवेदनशील है। यह उचित ही परिभाषित किया गया है कि पर्यटन प्राकृतिक सौंदर्य, वन्य जीवन, सांस्कृतिक आकर्षण व पारिस्थितिकी ये सभी एक ही एवं अविभाज्य व्यवस्था के तत्व हैं। पर्यटन के मूल संसाधन आधार को नष्ट होने से बचाने के लिये इनका संरक्षण किया जाना चाहिये।

हमारे बहुत से प्राचीन स्मारकों के पुरातन आकर्षणों को बरकरार रखने के लिये उनकी उचित देखभाल नहीं की जाती हैं। अजन्ता, एलौरा और एलीफेन्टा की गुफाओं में आए दिन पर्यटकों का भारी जमाव वहां नमी की अत्याधिक मात्रा उत्पन्न कर रहा है। यह गुफाओं के अन्दर हवा के स्वतन्त्र चक्रण को अवरूद्ध करता है। इसने भित्ति चित्र और चट्टानों की चित्रकारी को नष्ट करना शुरू कर दिया है। पर्यटक स्थल जैसलमेर गढ़ के समीप ही बंद नालियां मैला दृश्य उपस्थित करती है। हम्पी के मन्दिर एवं मूर्तियां पर गलत तरह से प्रयुक्त पुनरुत्थान तकनीक के कारण कई दाग आ गये हैं। खुजराहो मन्दिरों के समीप हवाईपट्टी पर वायुयानों के उतरने और उड़ान भरने से होने वाले कम्पन्न द्वारा मूर्तियों को नुकसान पहुँच रहा हैं। यह वायु मार्ग मुख्यतः पर्यटकों की भीड़ को जल्द से जल्द लाने और ले जाने के लिये खोला गया था। दिल्ली में जन्तर मन्तर भी गतिण ज्योतिष के अनुसार अब पूरी तरह से कार्य नहीं कर पा रहा है क्योंकि आसपास ऊँची इमारतों का निर्विघ्न निर्माण उसके ढाँचों पर आवश्यक सूर्य प्रकाश नहीं पड़ने देते हैं।

उदाहरण के लिए आगरा में ताजमहल के आसपास 10,500 वर्ग किमी. क्षेत्र साफ करने के लिए कोर्ट का आदेश आया है। प्रयत्न है कि ताजमहल को पहले की ही तरह से झिलमिलाता रखा जा सके। यह खतरा था कि मथुरा तेल शोधन संयंत्र और पास की हजारों फैक्टरियां से वायु में फेंके जाने वाले प्रदूषकों की वजह से विश्व प्रसिद्ध स्मारक अपना आकर्षण खो बैठेगा। अब समस्त क्षेत्र को 'ताज ट्रेपेजियम' कहते हैं। यह भरतपुर पक्षी विहार और फिरोजाबाद की काँच फैक्टरियों तक विस्तारित है। अब फैक्टरियों को साफ कर दिया गया है। उसके चारों ओर हरित पट्टी बना दी गई है। मथुरा के तेल शोधन संयंत्र से वायु प्रदूषण को भी नियन्त्रित किया गया है। परन्तु यमुना नदी का तट उतना ही गन्दा है जितना कि अन्य बहुत सी नदियां है। इसके किनारे बसने वाले शहर गन्दे होते जा रहे हैं।

अन्य सफल कहानी दिल्ली के वायु प्रदूषण की समस्या का निराकरण है। यह पेट्रोल एवं डीजल पर चलने वाले वाहनों की अनियन्त्रित वृद्धि के कारण उत्पन्न हो रही थी। दिल्ली को उस समय कठिन समय से गुजरना पड़ा था जब पेट्रोलियम से चलने वाले

टिप्पणी

स्थानीय बसों और टैक्सियों को सीएनजी (संघनित प्राकृतिक गैस), अपनाना पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप वायु में प्रदूषकों की मात्रा में तीव्र रूप से कमी आई। शहर की सड़कों पर चलते हुए सांस लेते ही अंतर महसूस किया जा सकता है। परंतु अभी भी अनेकों गटर, फैक्टरी के अवशेष और यमुना नदी में मिलने वाले नाले के अन–उपचारित गंदे पानी को नियन्त्रित करने की आवश्यकता है।

यह महसूस किया गया है कि लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर डालने वाले प्रदूषकों को अवश्य ही कम किया जाना चाहिए। इस शहर में शताब्दियों पुराने अधिकांश स्मारकों को उनके मूल रूप में बचाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। देश की राजधानी के बहुत समीप ही, खानों में धीमें और सतत शारीरिक श्रम के साथ खुदाई के बजाय डायनामाइट के अवैध खनन की सूचना है। यह मथुरा और वृन्दावन की बृजभूमि में चट्टानों की प्राचीन सुन्दरता को नुकसान पहुँचा रही है।

उपर्युक्त उदाहरण हमें बताते हैं कि वायु, जल और भूमि का बढ़ता प्रदूषण पर्यटन के मूल संसाधन आधार को नष्ट कर रहा है। यह बेहतर है कि उनके प्रतिकूल प्रभाव को रोका जाए।

यह स्वीकृत तथ्य है कि जन पर्यटन, सामान्यतः त्रासदायक होता है। इसने कमजोर इमारतों के अतिक्रमण द्वारा बहुत से समुद्रतटों को भौतिक रूप से नष्ट कर दिया है। इसके द्वारा मैंग्रोव वनों की अपार क्षति हुई है। इससे स्थानीय पहाड़ी ढ़लानों का अधः पतन हुआ है, सतही जल का बहाव सामान्य से कम हुआ है, और भूमिगत जल की पुनः भराई कम हो गई है। केवल पर्यटकों के आगमन पर रोक समस्या का हल नहीं है। स्थानीय लोगों और प्रशासन की सहभागिता पर्यावरण की सुरक्षा के लिये आवश्यक होगी।

स्थानीय समुदायों के लोगों की वन्य जीव विहारों को नियन्त्रित करने वाले अधिकारियों के साथ नाराजगी इसकी गवाही है। उन्होंने उनके संरक्षण कार्य को अनिर्वहनशील बना दिया है। ग्रामीण लोग पशुओं पर निर्भर करते है। उनको विहारों से बाहर कर दिया गया है। विहारों में वे छोटे पैमाने की खेती से भी वंचित कर दिये गये हैं। जीवन निर्वाह का अन्य कोई विकल्प नहीं दिया गया। स्थानीय लोग सहकारी पर्यटन से जोड़े जा सकते है। उन्हें पर्यटक जीपें चलाने, पर्यटकों का मार्गदर्शन करने या आहार व्यवस्था का संचालन करने के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है। न तो उनकी आय सुरक्षित की गई है, न ही उनके गांव पुनः स्थापित किये गये और न ही आवास अधिकार सुरक्षित किये गये हैं। पर्यटकों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या को नियन्त्रित करने के बाद भी वन्य पशु एवं पक्षी का संरक्षण करने के प्रयत्न, ग्रामवासियों और पार्क प्रबन्धन अधिकारियों के बीच टकराव का समाधान किया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

- विरासत पर्यटन के स्मारकों के अलावा, पर्यावरण के सभी घटक मृदा, वनस्पति, वन्य जीवन और जलीय फूलों को जन पर्यटन के दुष्परिणामों से रक्षा करने की आवश्यकता है।

टिप्पणी

- केवल पर्यटकों के आगमन पर नियन्त्रण समस्या का समाधान नहीं है। सतत विकास के लिए सहकारी पर्यटन के साथ–साथ स्थानीय समुदायों की सहभागिता अत्यन्त आवश्यक है।

(ख) स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

पर्यटक की रूचि के क्षेत्रों में पर्यटकों का अनियमित भारी प्रवाह स्थानीय संसाधनों पर भी अत्याधिक दबाव डालता है। पर्यटन का पहला प्रभाव पर्यटकों के भ्रमण के द्वारा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में धन का हस्तान्तरण होता है। अपने आप में यह अभिनंदनीय विकास हैं। परन्तु तुलनात्मक रूप में कम विकसित क्षेत्रों में पैसे का बहाव नई समस्यायें उत्पन्न कर देता हैं। भूमि की कीमत में वृद्धि हो जाती है क्योंकि पर्यटकों के लिये होटलों के निर्माण की अत्याधिक मांग होती है। उभरते पर्यटक स्थान पर दैनिक आवश्यकता की, विशेष रूप से नाशवान वस्तुएं जैसे दूध, अण्डे, सब्जी एवं फलों की कीमत में तेजी से वृद्धि हो जाती है। पर्यटकों की सेवा में लगे श्रम की मजदूरी में भी वृद्धि होती है। आय का सृजन एवं वृद्धि अच्छे संकेत हैं।

गतिहीन अर्थव्यवस्था के पड़ोसी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में कामगार लोग आने लगते हैं। यदि वे कुछ ही प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों पर लगातार आने लगते हैं तो प्रारम्भिक अवस्था में नये रोजगारों के सृजन के बावजूद, बेरोजगारी की समस्या बढ़ेगी। यह स्थिति बदलती रहती है यदि नये पर्यटक स्थलों या विद्यमान स्थलों में पर्यटन उद्योग का विकास उसके मुकाबले में होता रहे।

पर्वतीय सैरगाहों पर अल्प मौसम के दौरान पर्यटकों की संख्या में थोड़ी सी भी वृद्धि स्थानीय जल एवं बिजली की आपूर्ति पर भार बढ़ा देती है। बसों के पृथक बेड़े द्वारा पैकेज भ्रमण की सुविधा, भारत जैसे विकासशील देश में दर्शनार्थिओं की बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने में असफल रहती है। इनमें से बहुत से सुविधाओं का स्थानीय लोगों और पर्यटकों के बीच मिलजुल कर इस्तेमाल करना पड़ता है। परन्तु इसमें परेशानी हमेशा ही स्थानीय लोगों का होती है क्योंकि आपूर्ति कम हो जाती है और कीमत ज्यादा। ऐसी स्थिति में, रोजगार में लाभ के कारण स्थानीय निवासियों का सामाजिक कल्याण बाधित होता है। भूमि की बढ़ती हुई कीमत छोटे भूस्वामियों को बाहर कर सकती है। श्रमशक्ति को नौकरी पाने के लिये, लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में स्थानान्तरण से खेतीहर जनसंख्या में धीरे–धीरे कमी आने लगती है। कृषि भूमि की उत्पादकता प्रभावित क्षेत्र में कम हो सकती है। ये और कई अन्य संक्रमणीय प्रकृति की अनिवार्य समस्याएँ हैं। पर्यटकों की विशाल संख्या और उस पर्यटक क्षेत्र की वहन क्षमता के लिये पूर्व नियोजन की आवश्यकता होती है। यदि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पर्यटक आवागमन का दबाव अपनी सीमाओं के अन्दर नहीं रखा जाता है तो पर्यटक संसाधन अप्रयुक्त होते हुए भी नाशवान होते हैं।

- पर्यटक क्षेत्र में पर्यटकों का हल्का एवं अनियमित आगमन श्रम की मजदूरी, भूमि और दैनिक उपयोग की चीजों की कीमत में वृद्धि कर देता है।

टिप्पणी

- पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों के बीच बंटने वाले जल और बिजली की ज्यादा मांग और कम आपूर्ति अभाव की स्थिति उत्पन्न करती है। अधिकतर कष्ट सहने वाले हमेशा देशी क्षेत्रीय लोग होते हैं।
- पर्यटक केन्द्र की वहन क्षमता के साथ पर्यटकों के आगमन में वृद्धि और रोजगार प्राप्त करने हेतु आगंतुको के बीच एक सामंजस्य होना चाहिए अन्यथा अनेकों समस्याओं का जन्म होता है।

(ग) स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव

भारत जैसे कम विकसित देशों में पर्यटन के आर्थिक लाभ का हमेशा स्वागत किया जाता है। परन्तु उसके सामाजिक प्रभाव आसानी से नहीं पचाये जा सकते हैं। वे पर्यटक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच प्रतिक्रिया जागृत करते हैं। यह दो भिन्न मूल्य वर्गों के टकराव का परिणाम होता है। यह कोई कम प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि स्वयं गांधीजी द्वारा कहा गया था कि राष्ट्र न सिर्फ प्रजातन्त्र पर जीवित रहता है और न ही आर्थिक वृद्धि पर। उन्हें अपनी धरोहर पर गर्व करते हुए अपनी पहचान बनाए रखना चाहिये। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत की स्वतंत्रता के बाद से, हमारे लोगों ने अपनी कला और संस्कृति को पुनः जीवित करने में अत्याधिक ध्यान दिया इससे देश के भिन्न प्रदेशों की अपनी पहचान में वृद्धि होती है।

परन्तु हमारी धरोहर और संस्कृति के गर्व को ठोस पहुँचाने का प्रयास किया गया था। उसने अपनी सीमायें पार कर ली जब एक बार, चेन्नई के पास महाबलीपुरम एक लोकप्रिय सैरगाह नगरी को पूर्णतया पर्यटक स्थान में बदल देने के लिये हथियाने की बात छिड़ी थी। वह स्थान अपने मूल निवासियों से सम्बधित कला और मूर्तिकला के लिये ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है। मूल निवासी लम्बे समय से अपनी गाथाओं को पत्थर की मूर्तियों के जरिये व्यक्त करते आ रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय दबाव स्थानीय लोगों को बाहर निकालने की ओर प्रवृत्त कर देता। यह विदेशियों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे देता और उनकी स्त्रियों को पुलिनों पर स्वतंत्रता से पड़े रहने पर पूरी आजादी दे देता। यह ऐसा फैशन है जो भारतीय प्रथा के साथ मेल नहीं खाता। इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक नगरी स्वीकार करके, आगन्तुकों और स्थानीय लोगों के बीच संस्कृतियों का आपेक्षित टकराव एक ही बार में टाला जा सकता था। इसके जो प्रस्तावक थे, उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि मनोरंजन पर्यटन से उपार्जित आय में तेजी से वृद्धि होगी। परन्तु अन्य लोग इसे सांस्कृतिक औपनिवेश का स्वतंत्र भारत में वापस आगमन कहते थे। भिन्न अवस्थाओं पर ऐसे सांस्कृतिक टकराव की सूचना देश में कई अन्य पर्यटक केन्द्रों से मिली है।

जन पर्यटन के प्रतिकूल सामाजिक प्रभाव आनेवाले मेहमान पर्यटकों और स्थानीय मेजबानों के बीच टकराव का परिणाम होते हैं। ऐसे टकराव तीन सम्भावित तरीकों से होते हैं।

टिप्पणी

(i) जब पर्यटक बाजार से वस्तुएँ या सेवाएं खरीदते हैं, तो मेजबान क्षेत्र में बहुत से व्यक्ति खिन्न हो जाते हैं क्योंकि इन सेवाओं की बिक्री से उपार्जित आर्थिक लाभ के वे हिस्सेदार नहीं बनते हैं। पर्यटकों को दिया जाने वाला आतिथ्य–सत्कार वस्तु या सेवा को श्रेष्ठ कीमत पर सिर्फ बेचने की एक तकनीक होती है। पर्यटकों का स्वागत–समारोह पारम्परिक ढंग का नहीं होता है, परन्तु वह सिर्फ व्यापारिक होता है। इसका ढंग स्थानीय लोगों के व्यक्तिगत जीवन को प्रतिबिम्बित नहीं करता है।

(ii) जहां पर्यटक, मेजबानों के एक दूसरे के ज्यादा सीधे रूप में आमने–सामने हो जाते हैं, ऐसे सम्पर्क की वजह से स्थानीय परिवारों, स्त्रियों की फोटो ले ली जाती है। यह शंका उत्पन्न करती है क्योंकि पर्यटक, मेजबानों के जीने के ढंग, आकांक्षाओं या सामाजिक रीति रिवाजों से अनभिज्ञ होते हैं। ऐसे संपर्क की स्थिति में, स्थानीय व्यक्ति को विचित्र वस्तु के रूप में लिया जाता है। कभी–कभी, मन्दिरों त्योहारों या समारोहों में पर्यटक का मुक्त प्रवेश बिना आवश्यक मर्यादा का पालन किये, स्थानीय लोगों में नाराजगी उत्पन्न करता है। यह हो सकता है कि पर्यटकों का अक्सर आना या लम्बे समय के लिये ठहरना ऐसी शंकाओं को दूर कर दे।

(iii) जहाँ दोनों के बीच टकराव जानकारी और विचार पाने या आदान–प्रदान करने के लिये होता है, तो ऐसा टकराव सबसे कम हानिकर होता है क्योंकि इसक उद्देश्य मुख्य रूप से एक दूसरे की संस्कृति की पांरपरिक समझ पाना होता है।

आनेवाले पर्यटक स्थानीय युवाओं में नई इच्छाएँ जागृत करते हैं। यह विशेष रूप से युवा लड़कियों में ज्यादा होता है क्योंकि परम्परागत तौर पर लड़कियाँ घरों के काम से संबद्ध होती है। स्थानीय समाज के वयस्क लोग छोटों पर से नियन्त्रण खोने लगते हैं। युवा वर्ग पर्यटक आगन्तुकों की जीवनशैली की नकल करने लगता है। होटलों में रहने से पर्यटकों को स्थानीय लोगों की जीवन शैली को नजदीक से अवलोकन करने या उसमें भाग लेने का बहुत कम अवसर मिलता है। आज का जन पर्यटन छुट्टी का वातावरण उत्पन्न करता है क्योंकि दर्शनार्थी मुख्य रूप से आनन्द मनाने के लिये आते हैं। मेहमानों में पुरूष और स्त्री के बीच हर समय स्वच्छंद मेलमिलाप और कम वस्त्र पहनें उनकी युवा स्त्रियां स्थानीय पुरूषों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। समयोपरि, स्थानीय युवा के उपभोग के ढंग (पैटर्न, बाहर होटलों में खाने की शैली) में परिवर्तन आता है और जीवन में आनन्द उठाने की नई उम्मीदें जागृत होती हैं। पर्यटकों की उपस्थिति उनकी पारिवारिक परम्पराओं की पकड़ को कमजोर कर देती है। युवा लोग जो कुछ पर्यटकों की सेवाओं के बदले उपार्जन करते हैं उसका बड़ा भाग उनके अपनी मौजमस्ती पर खर्च होता है और जरूरतमंद परिवारों को ज्यादा लाभ नहीं मिल पाता है। इस परिवर्तन को स्थानीय युवाओं का ''सांस्कृतिक संक्रमण'' कहते हैं। पर्यटन का ऐसा नकारात्मक प्रभाव छोटे आकार के पर्यटक क्षेत्रों में अधिक होता है जहां विकास का स्तर निम्न और जनसंख्या का घनत्व कम है।

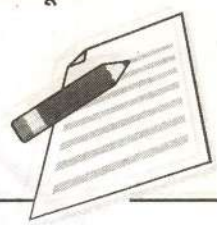

टिप्पणी

ऐसी ही स्थिति हमारे द्वीपों, दूरस्थ पर्वतों एवं घाटियों में मिलती है। ऐसे प्रभाव बड़े आकार के पर्यटक क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से कम होता है। यहां जनसंख्या का घनत्व ऊँचा होता है या लोगों का बड़ा हिस्सा इस उद्योग में काम करता है। कारण यह है कि पर्यटकों और मेजबानों के बीच संपर्क बारम्बार होने लगता है जिससे बड़े और विकसित पर्यटक क्षेत्र में संशय कम होता है। इसके साथ ही साथ, सांस्कृतिक अन्तर या अस्वस्थपूर्ण सामाजिक परिवर्तन, धीरे–धीरे स्थानीय निवासियों के ज्यादा उच्च शैक्षणिक स्तरों के साथ, गायब हो सकते हैं। जब स्थानीय जनसंख्या के बीच संपदा और कौशल का वितरण ज्यादा व्यापक हो और उनकी परम्परायें लोचदार हो तो मेजबान क्षेत्र को बड़े पैमाने के पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों द्वारा नुकसान नहीं हो सकता है।

- विदेशी पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच मुकाबला दो संस्कृतियों के बीच का संघर्ष है। ऐसा अनेकों पर्यटक केन्द्रों में अवलोकन किया गया है।
- पर्यटकों और उनके मेजबानों के बीच सिर्फ व्यापारिक संबंध होता है। यह बिल्कुल वैसे है जैसे बाजार में वस्तुओं और सेवाओं के विक्रेताओं और क्रेताओं के बीच होता है।
- पर्यटकों द्वारा स्थानीय लोगों को असाधारण वस्तु के रूप में लेना स्थानीय लोगों में क्षोभ उत्पन्न करता है।
- पर्यटक सामान्यतया आनन्द चाहने वाले उच्च उपभोग समाज के सदस्य होते हैं और ऐसे समाज के बीच आते हैं जहां आवश्यकतायें पूर्ण न होने से लोग व्यथित होते हैं।
- मेजबान क्षेत्र के युवा पर्यटकों के व्यवहार की नकल करने से सांस्कृतिक अलगाव का शिकार होते हैं और अपनी पारिवारिक परम्पराओं की पकड़ खोने लगते हैं। यह जन पर्यटन का वृहद नकारात्मक प्रभाव है, जो उसके प्रारम्भिक वृद्धि की अवस्थाओं में ज्यादा नुकसानदेह होता है।

पाठगत प्रश्न 32.3

1. जन पर्यटन के तीन वृहद नकारात्मक प्रभावों को बताइए जो स्थानीय युवाओं को उनकी अपनी संस्कृति से अलग कर रहा है।
2. पर्यटक स्थानों के आस–पास वायु, जल और भूमि प्रदूषण के एक–एक उदाहरण दीजिए।
3. खजुराहो के मन्दिर की मूर्तियों को क्या बुरी तरह प्रभावित करता है?

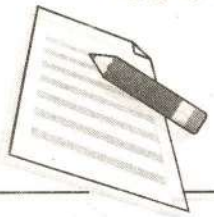

टिप्पणी

4. आम जनता की आवाज के बल के दो उदाहरण दीजिए जो पर्यटकों के लिये पर्यावरण की सुरक्षा करने में सफल हुए है।

32.7 नियोजन नीति का सार - उसकी आवश्यकता और योजना

भारत में पर्यटन के भावी प्रसार की संभावना अनन्त है। सर्व–उद्देश्यी पर्यटन विकसित करने के हमारे लाभों को पहले ही रेखांकित किया गया है। मेजबानों और पर्यटकों के बीच बाजार संबंध स्वयं ही विकसित हो जाता है, जब बड़ी संख्या में पर्यटक उन वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान के लिये तैयार होते है। यह संबंध अब इतना विकसित हो गया है कि आज पर्यटन की वृद्धि के लिये 'पर्यटक मार्ट' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्रारम्भिक काल में, व्यक्तिगत अंन्वेषकों या पर्यटकों का मेजबानों के साथ गहरा संबंध होता था। परन्तु जन पर्यटन बड़े समूहों में कुछ संस्थाओं द्वारा व्यापारिक आधार पर आयोजित किया जाता है। इस कारण आजकल का समय ''संस्थागत पर्यटन'' का है। ऐसा पैकेज टुअर समूह के सदस्यों के लिए ट्रेवल एजेन्सी द्वारा पूर्व–नियोजित होता है। यह थोड़े समय में अधिकाधिक स्थानों का भ्रमण कराते है। यह उनकी सब आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उनके लिये एक प्रकार से सुरक्षित वातावरण पेश करता है। परन्तु यह व्यक्तिगत सदस्यों को अपनी मर्जी या पसन्द से ठहरने या भ्रमण के लिये कोई अतिरिक्त समय नहीं देता है।

प्रारम्भिक काल के लघु स्तरीय अन्वेषणीय यात्रा आज के जन पर्यटनीय यात्रा या व्यापारिक मनोरंजनीय यात्रा के रूप में पूर्णतया परिवर्तित हो गई है। एक व्यक्ति या परिवार पर्यटकों से लेकर समेकित पैकेज टुअर तक ट्रेवल संगठन या संस्थाओं द्वारा नियोजित किये जाते हैं। इसलिए इसे ''संस्थागत पर्यटन'' का नाम दिया गया है। यह भ्रमण विकास के इतिहास में एक मोड़ है। पर्यटन के इन सब पहलुओं में ऐसे विशाल परिवर्तनों की दृष्टि में, भारत जैसे देश के पर्यटन के विकास के लिए लक्ष्य, विकल्प और रणनीतियां बनाने की इसके लिए राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तरों पर नियोजन नीति बनाना अति आवश्यक हो गया है।

क्षेत्र का स्वरूप, उसका पर्यटक संभावित आकर्षण और पर्यटक संसाधनों के विकास की गुंजाइश के विषय में विस्तृत सर्वेक्षण प्रथम कार्य है। उसके बाद, पर्यटकों की वर्तमान संख्या और निकट भविष्य में अपेक्षित संख्या के भावी अनुमान का हमें पता होना चाहिये। हमें उनके ठहरने की अवधि को लंबा करने के लिये संभावित आकर्षणों की पहचान कर लेनी चाहिये। हमें अपने ग्राहकों के व्यवहार और रूचियों में अपेक्षित परिवर्तनों की भी छानबीन कर लेनी चाहिये। यह जानकारी हमें पर्यटक केन्द्र की, अधिकतम पर्यटकों को वहन करने की क्षमता का मूल्यांकन करने में मदद कर सकती है। तत्पश्चात पर्यटको के लिए मूलभूत अनिवार्य सेवाओं के मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। इसके अंतर्गत निवेश आता है चाहे वह निजी हो या सार्वजनिक। भ्रमण पर्यटन

टिप्पणी

की प्रौन्नति की योजना उचित दिशा में तब तक नहीं बनाई जा सकता है जब तक सही समय एवं उचित स्थान पर उपलब्ध कराये जाने वाले सुख–साधनों का अनुमान न लगा लिया जाये। नियोजकों के समक्ष यह दो महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय विकास की हमारी योजनाओं के समस्त उद्देश्यों में पर्यटन के विकास को जोड़ना होगा।

क्या पर्यटन उद्योग को भी उसी तरह से लिया जाना चाहिए जिस प्रकार से अन्य उद्योगों को लिया जाता है? सामान्यतया पर्यटन मौसमी नौकरियाँ देता है यानी रोजगार वर्ष के कुछ खास समयों में उपलब्ध होता है जब पर्यटक ज्यादा संख्या में आते है। अतः वहाँ पर विकसित किये गये संसाधनों का साल के बाकी समय अल्प उपयोग होता है। रोजगार के वैकल्पिक स्त्रोतों को खोजने की आवश्यकता है। अतः जब पर्यटकों की संख्या कम हो छोटे पैमाने के उद्योगों में श्रम शक्ति को अवशोषित करने का प्रावधान बनाया जाना चाहिए।

सततवाही पर्यटन

पर्यटक मौसम के छोटे से काल में पर्यटकों का तेजी से बड़ी संख्या में आना संसाधनों पर भारी दबाव डालता है। एर्यटक स्थानों का इस्तेमाल इस स्तर तक पहुँच जाता है की उसकी जीवन अवधि कम हो जाती है। इससे उसकी लोकप्रियता को नुकसान होता है, पर्यटकों की संख्या धीरे–धीरे कम हो जाती है और रोजगार सृजन रूक जाता है। हम पर्यटक स्थलों के आकर्षण को पुनःजीवित करने के लिये उपाय करते रहते हैं। अतः पूर्ण पतन की अवस्था नहीं पहुँच पाती है। परन्तु कई पहाड़ी स्टेशन, पुलिनें और स्मारक हैं, जिसके बारे में हमने ध्यान नहीं दिया, उनकी चमक लौटाने की कोशिश नहीं की और लोगों के रोजगार के अवसर के बारे में नहीं सोचा।

पर्यटक स्थलों के अधःपतन की दो स्थितियाँ होती है। पहला, उनके संसाधनों का दुष्प्रयोग या अति प्रयोग, और दूसरा बिना सोचे समझे पर्यटक स्थलों का अल्प उपयोग। पर्यटक संस्कृति का उन्नयन सततवाही पर्यटन चलाने की मांग करता है। सततवाही पर्यटन दीर्घकाल तक संसाधनों का उपयोग करने देता है और रोजगार अवसरों के सृजन पर पूर्ण विराम कभी नहीं लाता है। गर्म मौसम के पर्यटक सैरगाहों में स्थानीय लोग पर्यटक संबंधी व्यवसायों में व्यस्त रहते हैं। हिमालय के ऊँचाई क्षेत्रों में सर्द मौसम पर्यटन का प्रतिष्ठापन और लोगों को कुटीर उद्योग उत्पादों के भण्डार को अगले शिखर मौसम में बिक्री के लिये तैयार करने में व्यस्त रखने का कार्य उन्हें साल भर की जीविका प्रदान करता है। सभी पर्यटक क्षेत्रों में पर्यटक पारिमित्र गतिविधियाँ सततवाही पर्यटन का जीवन है। पर्यावरणीय आकर्षण के संरक्षण को दीर्घकालिक करना, घातक गतिविधियाँ को टालना आदि लोगों को पर्यटक संबंधी व्यवसायों में लगातार रोजगार देती है।

पारिस्थितिकी पर्यटन या पारिमित्र पर्यटक गतिविधि सततवाही पर्यटन का भाग है। यह क्षेत्र विशेष की परिस्थिति और स्थानीय स्कृतियों का संरक्षण है। अच्छी गुणवत्ता की

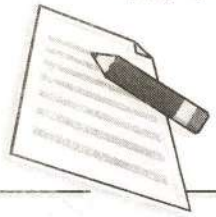

टिप्पणी

वायु और जल, सुव्यवस्थित जैव–विविधता और सुसंगठित मानवीय प्रयत्न पारिस्थितिकी–पर्यटन के प्रमुख घटक हैं। उनके बीच मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखने की आवश्यकता है क्योंकि उनके आपसी अंतः क्रियाओं की श्रृंखला इकट्ठा बांधे रखती है। कुछ वर्ष पूर्व हिमाचल प्रदेश और कश्मीर घाटी के पर्यटक क्षेत्रों में सीमेंन्ट फैक्टरियाँ पूरे जोर–शोर से शुरू की गई। चूनापत्थर की खुदाई, धूल, धुंआ और शोर का उत्सर्जन ने पारिस्थितिकी संतुलन को अव्यवस्थित कर दिया। ये राज्य मुख्य रूप से पर्यटन उद्योग पर निभर हैं जो सार्वधिक कम पारिमित्र हैं। अतः इससे यहाँ का पर्यटन उद्योग प्रभावित हुआ है।

नियमित या क्षेत्र चयनात्मक जन पर्यटन की प्रौन्नति के संबंध में कड़े निर्णय लेने की शीघ्र ही जरूरत पड़ सकती है ताकि वह कहीं भी बेतरतीब ढ़ंग से न विकसित हो सके। यह पर्यटक गतिशीलता को नियंत्रित करने की रणनीति है ताकि सैरगााह के पर्यावरण और बुनियादी ढाँचे के संबंध में उसकी वहन क्षमता को पर्यटक पार न कर जायें। यह अभिगम क्षेत्रों के सांस्कृतिक धरोहर को कायम रखती है। उसे नुकसान होने से बचाती है और हमारे युवाओं की सांस्कृतिक अलगाव से सुरक्षा करती है।

आगे महत्वपूर्ण है कि जन मानस पर्यटक संस्कृति को विकास, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय एकीकरण के उपकरण के रूप में स्वीकार करें। भ्रमण पर्यटन के पूर्ण विकास के लिए तीन सूत्री रणनीति बनाई गई है। पहला कदम समुदाय के अन्दर पर्यटन के लिये 'जागरूकता' सृजित करना है। मेहमान पर्यटकों को स्वागत करते समय, मेजबान के रूप में हमें अपनी पहचान के प्रति जागरूक होने चाहिये। दूसरा कदम है पर्याप्त एवं आसान परिवहन, सभी प्रकार की औपचारिक एवं अनौपचारिक ठहरने का स्थान एवं अन्य सुख साधन प्रदान करते हुए बुनियादी ढांचे की शक्ति को बढ़ावा जाये। तीसरा कदम है भू–दृश्य के क्षेत्रीय आकर्षणों के प्रभावपूर्ण प्रचार–प्रसार, क्षेत्र की धरोहर और पर्यटकों को विविध सेवाओं के लिये लोगों को जागरूक किया जाए। पर्यटन को अनेकों संगठनों के मिश्रित प्रयत्नों का प्रतिफल के रूप में ठीक ही परिभाषित किया जाता है।

- भ्रमण उन्नयन के इतिहास में लघु–स्तरीय से जन पर्यटन तक और व्यक्तिगत यात्रा से व्यापारिक स्तर पर शुद्ध मनोरंजक एवं सब समेत पैकेज भ्रमण तक का परिवर्तन प्रमुख बिन्दु है।
- पर्यटन को इस तरह सततवाही आधार पर विकसित करना चाहिये। जिससे शिथिल मौसम या सुस्त पर्यटन उत्पादक काल के दौरान श्रम शक्ति का अवशोषण छोटे पैमाने के उद्योगों में हो सके।
- सभी संभावित रूपों में क्षेत्र–चयनात्मक क्रमिक प्रकार का पर्यटन, पर्यटक यातायात के प्रवाह को कम करने की रणनीति है।
- लोगों के बीच पर्यटन की जागरूकता, बुनियादी ढ़ांचे की व्यवस्था, और विणपन एवं संचालन सुविधाओं समेत, क्षेत्र को पारिमित्र पर्यटन बनाने की रणनीति महत्वपूर्ण है।

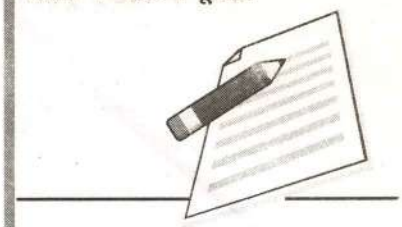

टिप्पणी

आइये अब, दो भिन्न पुलिनों पर पर्यटन के उन्नयन के लिये नीति संबंधी उपायों का सारांश एक बार फिर देखें, जिसकी चर्चा इस पाठ में किया गया है।

पाठगत प्रश्न 32.4

1. निम्नलिखित की व्याख्या करें:
   (क) पर्यटक मार्ट
   (ख) सततवाही पर्यटन
   (ग) पारिस्थितिकी पर्यटन
2. निम्नलिखित के कारण बताएँ:
   (क) पूर्व–नियोजित टुअर पैकेज और उससे हानियां
   (ख) मौसमी पर्यटन की व्यवस्था संसाधनों के अल्प–उपयोग में फलित होती है।

32.8 राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत उपाय

संघीय पर्यटन मंत्रालय के राष्ट्रीय प्राधिकरण और भारतीय पर्यटन विकास निगम जैसे सर्वोच्च प्रकाय, सामयिक सर्वेक्षण प्रतिवेदनों के आधार पर नीति सम्बन्धी निर्णय लेते है। दिशानिर्देश बनाने के लिये आवश्यक प्रतिक्रिया राज्य पर्यटन प्राधिकरणों, होटल मालिकों के क्षेत्रीय प्रकायों और ट्रेवल कम्पनियों से भी आपूर्ति की जाती है।

आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या सामान्यतः जाने वाले भारतीयों की संख्या से अधिक होती थी, पिछले कुछ वर्षा में यह प्रवृति उलट गई है। यदि विदेश जाने वाले भारतीय हमारे देश में आने वाले पर्यटकों की तुलना में ज्यादा हो, जैसा कि 2004 में हुआ था, तो हमारी विदेशी विनिमय आय कम होने लगती है। राष्ट्रीय पर्यटन प्राधिकरण को ऐसे परिवर्तन की पुनः जांच करनी चाहिये ताकि देश के हित को देखते हुए उसे सीमा में रखा जा सके।

पर्यटक यातायात नियमन करने के दिशानिर्देश निर्धारित करते समय, पर्यटन की बदलती प्रवृतियां और उसकी तत्कालीन स्थिति के सभी पहलुओं की निगरानी की जाती है। ऐसा इसलिए भी किया जाता है ताकि पर्यटन के उन्नयन के लिये आवश्यक सुख–साधन एवं प्रोत्साहनों को समाविष्ट किया जा सके। भ्रमण उद्योग व पर्यटन के भिन्न खण्ड़ों के लिये बजट व्यय तदानुसार प्रस्तावित किया जाता है।

(क) रियायती किराये एवं सुख-साधन

आजकल मुद्रण एवं इलैक्ट्रोनिक संचार के जरिये पर्यटन–जागरूक लोगों को

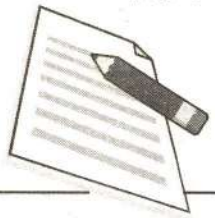

टिप्पणी

आकर्षित करने के लिये भ्रमण उन्नयन की कई योजनाओं का विज्ञापन दिया जाता है। पहले तो, देश के स्तर पर पर्यटन के प्रचार के लिए तैयार की गई जानकारी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये सहायक सिद्ध होती है। हवाई और रेल भ्रमण के लिये कटौतीयुक्त होलीडे पैकेज के रूप में प्रोत्साहन भिन्न आयु समूहों, परिवार के सदस्यों या यात्री समूहों के लिये उपलब्ध कराये जाते हैं। यह प्रोत्साहन भिन्न पर्यटन मौसम में अलग–अलग होता है। राष्ट्रीय नीति में समाविष्ट देशीय और अंतराष्ट्रीय, दोनों उड़ानों के लिये हवाई मार्ग का निजीकरण भारत में वास्तविकता बन गया है। सरकारी व गैर–सरकारी एजेन्टों द्वारा कम दर पर टिकटों की बिक्री हवाई कंपनियों के बीच बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा एवं प्रचार का परिणाम है।

पूर्ण मितव्ययी श्रेणी के किराये की तुलना में 'एपेक्स टिकट' कुछ शर्तों के साथ 50% और 60% सस्ते बेचे जा रहे हैं। ''एपेक्स'' का पूरा अर्थ है एडवान्स परचेज़ एक्सकरज़न फेयर (भ्रमण के किराये की अग्रिम खरीद)। निम्न लागत के किराये ने वर्ष 2004 के दौरान देशी पर्यटकों की संख्या में 30% वृद्धि कर दी थी। अन्य रियायत 'स्टैण्ड बाय' कटौती युक्त टिकट के नाम से जाना जाता है। यदि आखिरी क्षण पर कोई निशुल्क खाली सीट उद्घोषित की जाती है तो यह टिकट सीधे हवाई अड्डे पर उपलब्ध होती है। 'राऊंड दी वर्ल्ड' टिकट वाले पर्यटक को भारत में कई बार उतरने की अनुमति देती है। इसमें कटौती भी ज्यादा दी जाती है।

निजी हवाई कंपनियों को उड़ान की अनुमति की नीति, न केवल बहुत से मार्गों पर उड़ानों का विकल्प देती है, अपितु यात्रा के दौरान कुशल सेवायें प्रदान करने के लिए ज्यादा ध्यान रखती है। अब क्योंकि हवाई किराये के रियायतों में गुणन वृद्धि हो रही है, वातानुकूलित डिब्बों और आरामदेय ट्रेनों के किरायों का पुनरावलोकन प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अति आवश्यक हो गया है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये अफ्रीका और एशिया के पड़ोसी देशों के चुनिंदा हवाई अड्डों से ज्यादा आसान हवाई संबंध सुलभ बनाना राष्ट्रीय प्राधिकरण का काम है। यात्रा सेवाओं की व्यवस्था पर्यटन की उन्नति करती है जबकि टिकटों पर रियायत और छूट असली प्रोत्साहन होते हैं जो आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करते हैं। भ्रमण के बुनियादी ढ़ांचे की देखभाल के लिए अनेकों कदम उठाने पड़ते हैं। वास्तव में ये कदम केन्द्रीय प्राधिकरण की जिम्मेदारी होती है। यह प्राधिकरण के परिचालन में लुप्तांशों को भरने और कमी को ठीक करने की ओर संकेत देता है। उदाहरण के तौर पर दिल्ली से भुवनेश्वर तक भ्रमण, पर्यटकों में काफी लोकप्रिय है परन्तु इसके लिये दिन में सिर्फ एक उड़ान है। उड़ीसा में इस महत्वपूर्ण गन्तव्य स्थान (भुवनेश्वर) की तुलना में थाईलैण्ड में बैंकॉक पहुँचना कम महंगा है। अति तेज भ्रमण के इन दिनों में हवाई अड्डों का उच्चतम अंतर्राष्ट्रीय मानकों तक विकास और उसके तन्त्र में विस्तार की आवश्यकता स्वीकृत तथ्य है। अमृतसर और श्रीनगर में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का निर्माण, भारत के उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र में पर्यटक केन्द्रों तक पर्यटक यातायात बढ़ाने के लिए बड़ा कदम है। गौहाटी को अंतर्राष्ट्रीय हवाई मानचित्र पर लाना आसाम घाटी

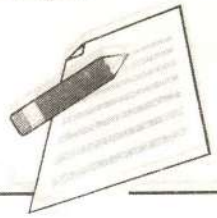

टिप्पणी

के केन्द्रीय गालियारे के लिये वरदान है, जो अब तक सक्रिय पर्यटन से अछूता था। यह हमारे सभी उत्तर–पूर्वी राज्यों के लिये सीधे यातायात संभरक (फीडर) के रूप में कार्य करेगा। इन क्षेत्रों में, ज्यादा विदेशी वाणिज्य–दूतावसों का खुलना भी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में वृद्धि कर सकता है क्योंकि वीसा बहुत जल्दी मिल जायेगा। आर्थिक सहायता प्राप्त दर पर विक्रय बाजार के खोलने पर पुनर्बल देने की नीति का प्रस्ताव पर्यटन के उन्नयन के लिये काम करेगा।

इस प्रकार की सुविधायें न केवल पर्यटकों के लिये अत्याधिक लाभकारी हैं बल्कि मेजबान समुदाय के लिये भी हैं। यह स्थानीय लोगों के लिये रोजगार में सहसा वृद्धि करती है और आने वाले दिनों में लाभदायकता उन्हें उद्यमी बना देंगी।

(ख) पर्यटन में असन्तुलन

भारत में, अपने विशाल आकार, बहुत लम्बे इतिहास और अपने विविध प्रकार के आकर्षणों के कारण, सशक्त पर्यटन के लिये अत्याधिक गुंजाइश है। अब तक, हमें 'विकसित पर्यटन के कुछ क्षेत्र मिलते हैं जो निस्तेज पर्यटन के बहुत से क्षेत्रों के बीच बिखरे हुए हैं। देश के आकार और उसकी विविधताओं के अनुपात में सक्रिय पर्यटन क्षेत्र अति छोटा है। दक्षिण में, मैसूर–बैंगलौर परिधि चक्कर को ज्यादा महत्व दिया गया है, जबकि उत्तरी कर्नाटक पर्यटन के लिये उपेक्षित पड़ा है। गोआ, केरल और उड़ीसा के किनारे समुद्र तट पर पुलिनें प्रसिद्ध पर्यटक गंतव्य है जबकि कर्नाटक, महाराष्ट्र और आन्ध्र की पुलिनों को अभी आगे बढ़ना है। उत्तराखण्ड और झारखंड के नये बने राज्यों में पहाड़ी पर्यटन, और छत्तीसगढ़ या अरुणाचल प्रदेश ने जो स्तर प्राप्त कर लिया है, वहाँ तक लाने के लिये इन पर्यटक राज्यों को अनेकों सुस्पष्ट कदम उठाने की जरूरत है।

कई क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय और देशी पर्यटकों के आगमनों के बीच भी व्यापक अन्तराल है। जम्मु व कश्मीर में पर्यटकों की कुल संख्या का 75% विदेशी पर्यटक हैं और पर्यटक मित्रवत राजस्थान में यह संख्या 55% है। परन्तु, गोआ में उनका अनुपात 10% और हिमाचल प्रदेश में केवल लगभग 3% है। किस प्रकार कोई मान सकता हे कि हिमाचल प्रदेश उन्हें बड़ी संख्या में आकर्षित करने में असफ़ल होगा यदि उस दिशा में व्यावहारिक उपाय किया गये हैं? दूसरी ओर, विदेशी पर्यटकों की अच्छी संख्या, लगभग 30 लाख से ज्यादा प्रत्येक वर्ष ताजमहल देखने आ रहे हैं और उतना ही आकर्षक अजन्ता–एलौरा की गुफाओं को दखने वालों की संख्या बहुत हैं।

आश्चर्य है कि तुलनात्मक रूप से ज्यादा विदेशी हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में मेकलिओडगंज (धर्मशाला) जाते है। यहीं पर दलाईलामा रहते हैं। उच्च हिमालय के कुल्लू–मनाली क्षेत्र में काफी कम संख्या में वे आते हैं, जबकि यह क्षेत्र ज्यादा समृद्ध प्राकृतिक आकर्षणों और संगठित जोखिम खेलकूदों में धनी है। पर्याप्त और केन्द्रित प्रचार का अभाव इस तत्कालीन प्रवृति का कारण प्रतीत होता है।

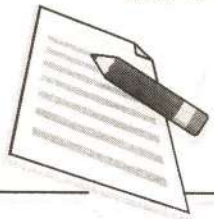

टिप्पणी

राजस्थान अधिक व्यय करने वाले अधिकतम विदेशी आगन्तुकों को इस रेगिस्तानी राज्य के महाराजाओं और धनी व्यापारियों के महलों व हवेलियों का प्रचार करके लुभा रहा है। केरल आयुर्वेदिक विधियों के साथ पुलिन पर्यटन का पोस्टर बॉय बनकर सफल हुआ है।

एकीकृत पर्यटन परिधियों के प्रचार द्वारा पर्यटन के ऐसे अन्यायपूर्ण वितरण को कम करने में राष्ट्रीय नीति, बेहतर है। ये परिधियां सभी राज्यों में ले जाई जा सकती हैं। उनमें से कम से कम एक गंतव्य को प्रत्येक राज्य में आधार स्टेशन के रूप में विकसित किया जा सकता है। अंतर राज्य पैकेज टुअर का पुनः प्रबन्धन करने का प्रस्ताव राज्यों को किया जा सकता है जिसे वे उसे संयुक्त रूप से ले सकें।

उदाहरण के लिये, केरल और तमिलनाडु और उनके नीचे दक्षिण में वन–रोपित पहाड़ी विभाजन, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, और उत्तराखण्ड के मन्दिरों के रास्तों और बौद्ध मठों से बहुत आशा है। राजस्थान के 'सैन बाक्स' का गुजरात तट तक विस्तार है। यह भ्रमण में विविधता और नयापन का अनुभव प्रदान करता है। भारत के केन्द्रीय पर्यटन मन्त्रालय ने तीन उत्तर–पूर्वी राज्यों में गौहाटी–शिलांग और अरूणाचल प्रदेश को पारिस्थितिकी पर्यटन को अंतर्राज्य परिधि के रूप में और बिहार के आस पास बौद्ध मठों के रूप में चुना है। अविकसित पर्यटक क्षेत्रों में सड़क किनारे पड़ावों के मुख्य स्थलों पर बजट आवास भी प्रदान करने के प्रश्न पर विचार किया गया है।

(ग) राष्ट्रीय आपदाओं का प्रबन्ध

बड़े प्राकृतिक या मानव कृत आपदा जब देश के कई क्षेत्रों या राज्यों को व्यापक रूप से आवृत करता है तो राष्ट्रीय आपदा कहा जाता है। एक झटके में वह लोगों की रोज़ी रोटी छीन लेती हैं। अभी हाल ही में सुनामी भूकंपीय समुद्री लहरों द्वारा हमारे तटीय क्षेत्रों के बड़े भाग पर हुआ विनाश राष्ट्रीय आपदा थी। भारत के बहुत से भागों में उग्रवादियों द्वारा ज़ारी आतंकवादी गतिविधियां मानव–कृत राष्ट्रीय आपदायें हैं। जब कभी समुद्री पुलिनों का पूरा अस्तित्व ही बह जाय, तो पुलिन पर्यटन पूरा खत्म हो जाएगा। इसी तरह से, हमारे कई पर्यटन क्षेत्रों में, अत्याधिक संवेदनशील पर्यटन उद्योग को वृहत् स्तर पर उग्रवाद के कारण सुख–साधनों में कमी का सामना करना पड़ा है। कश्मीर ऐसे क्षेत्र का एकमात्र उदाहरण है। ऐसी आपदाओं को राष्ट्रीय स्तर की रणनीति अपनाने से संभाला जा सकता है और उस पर निर्भर स्थानीय लोगों के जख्मों को भरा जा सकता है। धन की तुलना में, स्थानीय लोगों की सहानुभूति द्वारा सहायता का हाथ बढ़ाकर, उनकी सक्रिय सहभागिता पर्यटक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने में बहुत मदद करती है। मिजोरम राज्य से सुनामी आपदा के पीड़ितों को बांस की आपूर्ति करना एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। यद्यपि मिजोरम विनाश के स्थल से काफी दूर स्थित है। तमिलनाडु तक बांस ढोने का व्यय उत्तर–पूर्वी रेलवे द्वार वहन किया गया। पीड़ित लोगों के लिये सहानुभूति की तुरन्त लहर का ही यह परिणाम था कि उनके लिये आवास ढ़ांचों का पुनर्निर्माण जल्द हुआ। इससे वे लोग पर्यटन से रोजी रोटी कमाना दोबारा शुरू कर दिए।

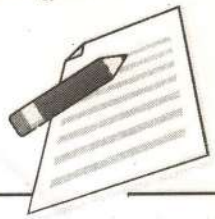

टिप्पणी

एक अकेली राष्ट्रीय एजेन्सी, हमारे अपने देश में न केवल सुनामी से चोट खाये क्षेत्रों से, परन्तु पड़ोसी देशों में ऐसे क्षेत्रों से भी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को निकालने के लिये अपने संसाधनों को तुरन्त इकट्ठा कर सकती है। हमारे पड़ोस में फंसे पर्यटकों को रातों रात ही वीसा जारी कर दिये गये थे। भारतीय सरकार के अंतर्गत कार्य कर रही राष्ट्रीय एजन्सियों द्वारा यह श्रेष्ठ संकट संचालन का उदाहरण रहा। ध्वंस हुई समुद्री पुलिनों को विकसित करना कोई आसान कार्य नहीं था। फिर भी, तेजी से बढ़ते उद्योग के रूप में पर्यटन को पुनः जल्द ही प्रारम्भ कर लिया गया। सस्ते पैकेज और प्रोत्साहनों ने उसे पुनः जीवित करने में मदद की। यहां तक कि विश्व में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक गन्तव्यों में पोर्ट ब्लेयर अग्रणी रहा। राष्ट्रीय एजेन्सी के लिये यह सम्भव है कि वह पीड़ितों की सहायता के लिए देश में जागरूकता अभियान शुरू करे।

32.9 क्षेत्रीय स्तर पर नीतिगत उपाय

साधारण शब्दों में, समस्त पर्यटक क्षेत्र स्वयं ही अपने दृश्य एवं अदृश्य उत्पादों की बिक्री के लिये एक बाजार है। क्षेत्र अपने प्राकृतिक दृश्यों एवं विरासत में मिले सांस्कृतिक भूदृश्यों का विपणन करता है। पहाड़ियों और घाटियों, बहुरंगी चट्टानों, कुहरा, रेत, जल वृक्ष और सरस हरित खेतों से लेकर, निर्मल आकाश, बादलों की छाया या बूंदाबांदी, बरसात पर्यटन की परिसम्पतियां है। पर्यटक स्थल का आकर्षण उसकी अदूषित महक और मौसम अनुसार बदलते रंग बिरंगे दृश्य आगन्तुकों को आमन्त्रित करते हैं। इनका विपणन मेजबान के लिये भी अच्छी आय का साधन बनता है। स्पष्टतया, उसके रख–रखाव के लिये किये जाने वाले उपाय क्षेत्रीय नीति की प्राथमिकता होनी चाहिये। क्षेत्र अध्ययनों द्वारा नये आकर्षक स्थलों को खोजने की सतत आवश्यकता रहती है। सुगम्य स्थान का पर्यावरण और मानव–कृत दृश्यों में सुधार की गुंजाइश उस स्थान की पसन्द निर्धारित करेगी।

(क) राज्यों से केस स्ट्डी

अपने पहाड़ी पर्यटन के लिये प्रसिद्ध राज्य पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ सामंजस्य बनाने में असफल रहते हैं। उन्हें होटलों में उपयुक्त रूप से ठहराने में असफल रहते हैं, हालांकि सभी बड़े पहाड़ी स्टेशनों पर कई अच्छे होटल उपलब्ध कराने के प्रयास किये गये हैं। हिमाचल प्रदेश पर्यटन ने राज्य के मैदानी किनारे के पास मध्यम ऊँचाई पर छोटे आकार के तीन नये पहाड़ी सैरगाह बनाने का प्रस्ताव दिया है। क्योंकि से स्थान मैदानों के पास स्थित है और यहाँ पर्यटकों की संख्या सर्वाधिक देखी जाती है। ऐसी आशा की जाती है कि यह उपाय पुराने पहाड़ी स्टेशनों की पर्यटक पसन्द भी बरकरार रखेगा क्योंकि यहां से पर्यटकों की संख्या कम होगी। ज्यादा आय उपार्जन के उद्देश्य से राज्य भविष्य में पर्यटक नगर निर्माण की योजना बना रहा है। यह नगर अप्रवासी भारतीयों के लिये उपयुक्त होगा।

वर्तमान में, पर्यटन के शिखर मौसम में पर्यटक तीन लोकप्रिय पहाड़ी सैरगाहों शिमला,

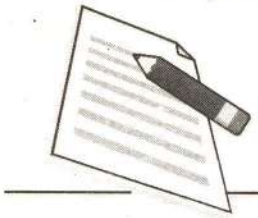

टिप्पणी

मनाली और डलहौजी में केन्द्रित हो जाते हैं। नये स्थलों को आकर्षक बनाने के लिए सभी सुविधायें प्रदान करना आवश्यक है। इस तरह , वे सड़क के किनारे बने सुखकर पड़ावों से ज्यादा अच्छे होंगे। स्थल अविकसित पड़े हैं, इसलिये नहीं कि वे कम पसन्द के दर्शनस्थल हैं। सामान्यतया जहाँ ज्यादा पर्यटक जाते है उसे उस स्थान की लोकप्रियता मान लेते है। परन्तु यही सोच अन्य स्थानों की उपेक्षा का कारण बन जाता है।

हिमाचल पर्यटन ने, राज्य के उत्तरी अन्दरूनी भागों में, किन्नोर और स्पिती क्षेत्रों में पर्यटक गतिविधियों की गति तेज करने के लिये सम्भावित कदमों पर विचार किया है। यह क्षेत्र उच्च और कठिन पर्वतों के हैं। यहां पर्यटकों द्वारा अपेक्षित सुविधायें काफी कम है। यह निर्णय लिया गया है कि हिन्दुस्तान–तिब्बत राजमार्ग और स्पीति घाटी के रास्ते गांवों के जनजातीय लोगों को सूचना दी जाय कि आने वाले आगन्तुकों के ठहरने की व्यवस्था करें। यह व्यवस्था अपने घरों के एक हिस्से में करें। यह क्षेत्र बर्फ आवृत ऊँची पर्वतमालाओं के सुन्दर दृश्य और मठों के अन्दर बौद्ध विषय से संबंधित प्राचीन भित्ति चित्रों के लिये विख्यात हैं। जोखिम भरी पैदल यात्रा पर्वतारोण या भारत के अन्दर इस छोटे से तिब्बत की असाधारण संस्कृति में दिलचस्पी रखने वाले सच्चे पर्यटक इन क्षेत्रों से गुजरना चाहेंगे। ऐसी आशा है कि इस प्रकार के पर्यटक, उच्च स्तर के सुख–साधनों के अभाव में भी देशी लोगों के साथ उनके घरों में ठहरने तथा उसका अनुभव पाने के लिये आएंगे।

जम्मू एवं कश्मीर अपने अनेकों आकर्षणों का पूर्ण फायदा उठाने के लिये 21 नये पर्यटक गंतव्यों को खोलने के बारे में सोच रहा है। इसका अंतर्निहित उद्देश्य, कुछ प्रसिद्ध स्थानों से पर्यटक यातायात को हटा कर एकान्त पर अविस्मरणीय स्थलों की ओर ले जाना है। ऐसा ही महाराष्ट्र पर्यटन सतपुड़ा पहाड़ियों पर पहाड़ी सैरगाहों और सह्याद्रि पर्वतमाला पर दर्जनों अविकसित पर्यटक स्थानों की उपेक्षा नहीं कर सकता है। चार अत्याधिक दर्शनीय माने जाने वाले पहाड़ी स्टेशनों का आकर्षण जीवित रखने के लिये वह वहां से पर्यटकों की असाधारण भीड़ को कम करने का प्रयास कर रहा है। ज्यादा सुविधायें और ज्यादा असान पहुँच प्रदान करके उपेक्षित पहाड़ी सैरगाहों का प्रचार करने की जरूरत है। इससे दोहरा उद्देश्य पूरा होगा। पर्यटन को राज्य के नये हिस्सों में ले जाने में मदद मिलेगी तथा पुराने पहाड़ी स्टेशनों की पर्यटक–श्रेष्ठता लंबे समय तक बनाये रखने में मदद मिलेगी। उत्तर प्रदेश भी 10 अज्ञात पर्यटक स्थलों का विकास और प्रचार का प्रस्ताव किया है। यह अधिकांशतः राज्य के पूर्वी और दक्षिणी भाग में स्थित है। इससे पर्यटन के लाभों का संतुलित वितरण प्राप्त होने की भी आशा है।

आन्ध्र प्रदेश में हैदराबाद के आस–पास बौद्ध स्मारक, विशाल मस्जिदें, पुरातात्विक स्थल और अजायबघर पाये गये हैं। दक्षिणी तिरूपति अंचल बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू तीर्थ यात्रियों का प्रवेश द्वार है जो तिरूमाला पहाड़ियों में भगवान वेंकटेश्वर के मन्दिर में पूजा करते हैं। उत्तरी विशाखापट्टनम अंचल पुलिन पर्यटन, आदिकालीन गुफाओं, पहाड़ियों, सर्वाधिक प्राचीन मन्दिरों और सुन्दर अरकु घाटी में जनजाति जीवन के साथ निकटता

टिप्पणी

के लिये वर्गीकृत किया गया है। पूर्वीघाट, नदियां और झील, जलाशयों को जोखिम खेलों से रोमांच अनुभव करने के लिए जनता के लिये खोल दिया गया है।

दोनों अभिगमों से कोई एक को चुनते हुए पर्यटक यातायात को उनके विशेष रूचि के क्षेत्रों में नियमित करने के लिये भ्रमण–सूचियां नियोजित की जाती हैं। इसके लिए उनके पास दो विकल्प होते हैं। पहले विकल्प में लोग सड़क किनारे अल्पकालीन ठहराव के लिये जाना पसंद कर सकते हैं। यह त्योहारों और अन्य घटनाओं के साथ समायोजित होता है और सामान्यतः भिन्न दिनों मे भिन्न स्थानों पर रहने की व्यवस्था होती है। दूसरा विकल्प विशिष्ट अंचल में जाना है ताकि उस स्थान विशेष की गतिविधियों में हिस्सा ले सकें। इसका अंतर्निहित उद्देश्य भिन्न भागों में पर्यटकों को बिखराना है ताकि उनकी असंचालनीय अत्यधिक भीड़ पर काबू पाया जा सके। पर्यटन के सरकिट मार्गों पर सुख सुविधा के साधन को विकसित करके उचित प्रचार द्वारा इसे हासिल किया जा सकता है।

(ख) नव-प्रवर्तनीय पर्यटन–उसके रूप

किसी भी क्षेत्र विशेष में एक बार विकसित हुआ पर्यटन या कुछ क्रियाएं जिन्हें किसी भी तरह से और कहीं भी बदले बिना बार–बार दोहराया जाता है, एकक पथ पर्यटन, के रूप में जानी जाती है। यह लम्बे समय तक रूचि को कायम नहीं रख सकता है। नवप्रवर्तनों या मनोरंजन के और स्त्रोतों की अनुपस्थिति में क्षेत्रीय पर्यटन जल्दी ही अपने परिपूर्णता के बिन्दु तक पहुँच जाता है। यदि पर्यटन की ऐसी शांत अवस्था लम्बे समय तक चलती है तो यह पर्यटकों के लम्बे ठहराव की रूचि को छोटा करने लगती है। उनमें से कुछ दुबारा जाना नहीं चाहते है या कहीं अन्य स्थान में जाना चाह सकते हैं। इस अवस्था से निकलने के लिये नवप्रवर्तनों की बात आवश्यक है। विभिन्न प्रकार के नवप्रवर्तनीय पर्यटन निम्नलिखित हो सकते हैं।

(i) ग्रामीण पर्यटन, (ii) सप्ताहांत पर्यटन, (iii) फार्म हाउस पर्यटन, (iv) स्वास्थ्य पर्यटन (v) हाट पर्यटन (vi) उत्सव पर्यटन (vii) अजायबघर पर्यटन (viii) चिकित्सा पर्यटन और (ix) बाघ या हाथी पर्यटन।

(i) ग्रामीण पर्यटन का विचार हिमाचल प्रदेश से आया है। यह आदर्श पर्यटक गांव स्थापित करने का प्रस्ताव करता हैं। यह पहले से ही विद्यमान गांवों के समीप स्थित है और सारे शहरी सुख–साधन प्रदान करता है। पर्यटन गांव ग्रामीण परिवेश का एक रूप प्रतीत होगा। मानव जातीय पर्यटन के लिए क्षेत्र के श्रेष्ठ ग्रामीण दृश्यों का उपयोग करने की बात की जाती है। यह पहाड़ी गांव की जीवन शैली को आत्मसात करने में पर्यटकों की मदद करेगा, परन्तु पूर्णतया नूतन परिवेश में।

(ii) बहुत से व्यस्त पर्यटकों को मनोरंजन के लिए लम्बी छुट्टियां उपलब्ध नहीं होती हैं। आज इंटरनेट सुविधाओं के दिनों में, पर्यटक को सैरगाहों की समुचित

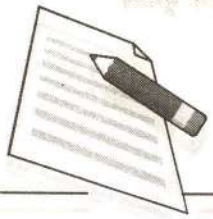

टिप्पणी

जानकारी देना आवश्यक हो जाता है। इस तरह पर्यटक समयानुकूल अथवा कार्यक्रम तय करते हैं ताकि थोड़े से सप्ताहांत छुट्टी का आनन्द ले सके। सप्ताहांत छुट्टी पर्यटन शहरों की तेज जीवन शैली के साथ पर्यटन को एकीकृत करने का उदाहरण है। मुम्बई में माथेरन में आज 100 सैरगाहों का निर्माण करके पर्यटन को सफलता पूर्वक नया आकार दिया है। जबकि 1980 में उनकी संख्या सिर्फ पांच थी। उसने अपने इलाके में केवल पैदल चलने वालों को ही आने की अनुमति दिया है। यह अकेला ऐसा स्थान है जहाँ गाड़ियों से इलाके में प्रवेश करना वर्जित है।

(iii) पंजाब और हरियाणा जैसे सम्पन्न कृषि प्रधान राज्यों ने 'फार्म हाउस' या 'नहर पर्यटन' संस्थापित करके पर्यटन को जीवंत बनाया है। उभरते फार्म हाऊस के इन क्षेत्रों में, यह अल्पकालिक पर्यटकों के मिलन के लिए कोर बिन्दु का काम कर सकते हैं। पर्यटकों को एक दिन के लिए दिल्ली के आसपास के बागों में ले जाना फार्म हाउस की पर्यटक गतिविधियों हैं।

उद्यान पर्यटन को शीघ्र पिकनिक मनाने और अल्पकालीन मनोरंजन के साथ संयुक्त किया जा सकता है। असानी से पहुँचने योग्य समीप के शहरों से आने वालों के लिये नहर किनारे रेस्ट हाउस या सड़क किनारे छुट्टी मनाने के लिए अन्य पिकनिक स्थल हैं। पंजाब में भाकड़ा बांध के नजदीक नांगल उपनगर एक ऐसा ही उदाहरण हैं। शहर निवासी ऐसे स्थलों को शहरी जीवन की नीरसता से अच्छे छुटकारे के रूप में देखते हैं और भ्रमण को अच्छा बिताया दिन समझते हैं।

(iv) स्वास्थ्य पर्यटन को केरल और मुम्बई के नजदीक लोनावाला की पहाड़ी सैरगाहों में लोकप्रिय बनाया जा रहा है। यह योग आसन, मालिश और जड़ी बूटियों के अनुप्रयोग द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा को मजबूत बनाने की सुविधायें प्रदान करता है। इनका प्रचार एक महीने या ज्यादा के रिफ्रेशर कोर्स के दौरान, श्रेणियों में उनके वर्गीकरण अनुसार, किया जाता है। यह आरामदेय वातावरण में, स्वास्थ्यपूर्ण आहार और दिन भर की गतिविधियों के साथ अभ्यास किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उपचार के विविध पहलुओं पर ध्यान देना है न कि दवा के उपयोग पर।

(v) "हाट पर्यटन" के आधुनिक विकास का दिलचस्प इतिहास है। पुराने समय में, हमारे मुख्य ग्रामों और नगरों में सप्ताहिक चल बाजार आम दृश्य होता था। ग्रामीण क्षेत्र या नगर में केन्द्रीय स्थल को हमेशा के लिए हाट के स्थान के रूप में निश्चित कर दिया जाता था।

सभी प्रकार के स्थानीय उत्पाद, दैनिक उपयोग की साधारण वस्तुओं समेत, आस–पास के संभरक गांवों से यहां लाई जाती थी। स्थानीय समुदाय की पहुँच के अन्दर रंग बिरंगी गतिविधियों का आयोजन इसे ग्राम मेला का रूप देता है। "दिल्ली हाट" लोकप्रिय बन गई है। क्योंकि सप्ताहिक बाजार को पर्यटन के साथ

टिप्पणी

स्थायी रूप से जोड़ दिया गया है। पहले के आसपास के गांवों के स्थान पर भारत के भिन्न राज्यों को सम्मिलित करते है। हाट पर्यटन विविध प्रकार के व्यापार मेलों की मिलती–जुलती गतिविधि में बदल गया है। यह दिल्ली में और अन्य बड़े शहरों में समय–समय पर बड़े पैमाने पर आयोजित किया जाता है।

(vi) भारत अनगिनत प्रकार के उत्सवों और मेलों की भूमि है। फसल कटाई और बुआई से जुड़े मौसमी त्यौहार समस्त भारत में अलग–अलग नामों के अंतर्गत मनाये जाते हैं। यह एक प्रकार से पर्यटन के क्षेत्रीय आकर्षक दर्शाता है।

परन्तु त्यौहारों के कई नूतन अवतार हाल ही के वर्षों के दौरान उभरकर आये हैं जो पर्यटकों को ज्यादा पसंद है।

जैसलमेर का मरूस्थल उत्सव ऊँट सवारी और लोक नृत्यों पर केन्द्रित है, पुश्कर का पशु मेला त्यौहार, कुल्लू और मैसूर का भिन्न प्रकार का दशहरा, अहमदाबाद गुजरात का पतंग उड़ाने का त्यौहार उनके अनेकों उदाहरण हैं। ये पर्यटकों के बीच अत्याधिक लोकप्रिय हुए हैं।

प्रसिद्ध व्यक्तियों और घटनाओं का जीवनवृत्त पुनः बताने के लिए प्रकाश व ध्वनि शो आयोजित किए जाते हैं। सर्वाधिक प्रख्यात कार्यक्रम दिल्ली और हैदराबाद के पास गोलकुंडा के किलों के आस–पास हुई घटनाओं का स्मरणोत्सव मनाने के लिए दिखाए जाते हैं।

आधे ध्वस्त धरोहर स्थलों के आस–पास भी जैसे कि पटियाला में किला मुबारक उत्सवों का आयोजन पाश्चात्य गौरव को पुनः जीवित करता है। यह पंजाब पर्यटन के लिए लोकप्रिय नवीकरण सिद्ध हुआ है और पर्यटक अच्छी संख्या में आते है। भारतीय पर्यटन के विकास में ये तमाम उत्सव और भी अधिक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

(vii) आर्ट गैलरी और विभिन्न प्रकार के स्थानीय स्तर के अजायब घरों का निर्माण लोगों की कल्पना को आकर्षित करता है। संबंधित स्थानीय इतिहास या प्रमुख क्षेत्रीय व्यक्तित्वों के प्रमुख कार्यों के चित्रण से स्थानीय देशभक्त मानवीय पर्यटन के उन्नयन के लिए कार्य करेंगे। मानवीय पर्यटन स्थानीय परम्पराओं, ग्राहकों की संस्कृतियों, स्थानीय परम्पराओं, ग्राहकों की संस्कृतियों, स्थानीय नायकों का इतिहास एवं जीवन वृत्तान्त के संरक्षण पर ध्यान देता है। ये लोगों की ऐतिहासिक संपदा में वृद्धि करती है।

(viii) चिकित्सा पर्यटन जिसे डेन्टल टूरिज्म भी कहा जाता है, पाश्चात्य विश्व के देशों से आने वाले विदेशी पर्यटकों का नया शौक है। पश्चिमी देशों में गंभीर रोगों और दांत संबंधी रोगों का डाक्टरी इलाज काफी मंहगा है और भारत के चुनिंदा शहरों में अच्छी सुविधायें अब उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य–जागरूक पर्यटक भारत में अपने ठहराव के दौरान हमारे अस्पतालों में जाते हैं। इलाज करवाना उनके भ्रमण अनुसूची का मुख्य मुद्दा होता है।

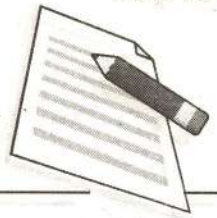

टिप्पणी

(ix) वन्य जीवन, विशेष रूप से बाघ और हाथी का उनके आवास में, अध्ययन बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने वाला है। खेद की बात है कि हमारे बाघों की संख्या कम हो रही है। फिर भी यह बताया जाता है कि ताजमहल के बाद इसका स्थान है। बाघ सर्वाधिक बड़ा आकर्षण है और पर्यटक अरण्य क्षेत्रों के दर्शन के लिए बार–बार आते रहते हैं और बाघ की झलक पाने के लिए कई दिनों तक इंतजार करने की परवाह नहीं करते हैं। काले बाजार में मृत बाघ की कीमत सिर्फ 50,000 डालर है जबकि उसे जिन्दा देखने के लिए आनेवाले पर्यटकों से हम तीन करोड़ डालर कमा लेते हैं। जहां बाघ विहार स्थित हैं वहाँ बाघ पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को काफी उन्नत करेगा। यदि हम बाघों की सुरक्षा का ध्यान रखें, बिल्कुल वैसे ही जैसे चीन अपने पाण्डा का विज्ञापन करता है और आस्ट्रेलिया अपने कोआला का तो बाघ पर्यटन स्थानीय लोगों को रोजगार का मजबूत आधार प्रदान करेगा क्योंकि पर्यटन उद्योग में इसकी अपार भूमिका है।

विहारों में पहुँच पर नियन्त्रण लगाकर अनाधिकार प्रवेश को नहीं रोका जा सकेगा। स्थानीय लोग बाघ या हाथी को जिन्दा रखेंगे यदि उन्हें रोजगार प्रदान करके इसमें जोड़ा जाता है। उन्हें वन्य जीवन के संरक्षण से होने वाले लाभ का पता चलेगा। विदेशी पर्यटक हाथी की सवारी करना विशेष रूप से पसन्द करते हैं। बीहड़ वनों में बाघों के पद चिन्हों के साथ–साथ बाघों के पंजों के निशानों का अध्ययन हाथियों के इस्तेमाल द्वारा पूरा किया जाता है।

(ग) नवीन पद्धतियां

गैर–सरकारी सामाजिक संगठनों एवं धार्मिक ट्रस्टों के सार्वजनिक क्षेत्र पर्यटन को उसके परिपूर्णता बिंदु तक पहुँचने से बचाने के प्रयत्नों को सराहा जा रहा है। ये जल आपूर्ति के प्राचीन स्त्रोतों जैसे कुएं, बावली या तालाब को पुनः जीवित करने के लिए आगे आ रहे है। दीर्घकाल से उपेक्षित सराय की मरम्मत करने और कचरा साफ करवाने का कार्य करने के लिए सामने आये हैं। इसके लिए पर्यटकों से सामान्य शुल्क भी लेते है।

प्राचीन स्मारकों और विरासत स्थलों में बहु–दरवाजों से प्रवेश या निकास की स्वतंत्रता पर रोक लगाने के लिए कड़े नियम बनाये जाने चाहिए। बड़ी संख्या में पर्यटकों के आने से पर्यटन को बढ़ावा ज़रूर मिलता है परन्तु शिखर मौसम में स्मारकों पर जनसमूह को नियमित करने की आवश्यकता है। जहां कहीं भी, किसी भी समय की नीति के स्थान पर, आगन्तुकों का एक दरवाजे से प्रवेश व निकास के नियमों द्वारा प्रतिबंधित करना चाहिये।

अब पर्यटकों से साधारण कर लेने पर विचार किया जा रहा है क्योंकि पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों द्वारा सामान्यतः बेकार का समान, कूड़ा–करकट छोड़ दिया जाता है।

पहाड़ी स्टेशनों और पर्वतों पर पर्यटन स्थलों के सख्त वाणिज्यीकरण से रोकना चाहिये और खाने पीने के कई केन्द्र खोले जाने चाहिए।

टिप्पणी

क्षेत्र विशेष में मेजबान समुदाय और आने वाले मेहमानों के बीच अत्याधिक आवश्यक सहयोग समय की जरूरत है। उदाहरण के लिए, राजस्थान में भरतपुर के नजदीक घाना राष्ट्रीय उद्यान के आसपास के स्थानों में सूखा काल में भी आर्द्रभूमि के लिए यदि नहर से कुछ पानी नहीं छोड़ा जाता है तो न तो उन्हें फायदा होगा, न पर्यटकों को। आर्द्रभूमि प्रवासी पक्षियों का अपना आकर्षण खो देगी और किसान अपने भूजल की उत्तरोत्तर पुनः भराई से वंचित रह जाएगा। इस तरह की क्षेत्र विशेष की नवीन विधियां पर्यटकों की संख्या में गिरावट को रोकेंगी।

- विभिन्न क्षेत्रों के मुख्य आकर्षणों पर उचित ध्यान के साथ सक्रिय पर्यटन को प्रौन्नत करने की पर्यटन सामर्थ्य का प्रचार प्राथमिक जरूरत है।
- भ्रमण सेवाओं के दौरान सुख–साधनों का समय अनुसार नवीकरण, हवाई अड्डों के मानक के स्तर को ऊँचा करना और आर्थिक सहायता प्राप्त विपणन के लिए बाजार/दुकान खोलना, उच्च व्यय करने वाले पर्यटकों को लुभाने क लिए आवश्यक उपाय हैं।
- कुशल आतिथ्य–सत्कार सेवाओं के साथ–साथ विभिन्न वर्गों के लिए हवाई व रेल टिकटों पर उदारता के साथ दी जाने वाली रियायतें, पर्यटकों के आगमन को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन है।
- राष्ट्रीय नीति के तहत कुछ खास क्षेत्रों में विकसित पर्यटन के स्थान पर पर्यटन–संस्कृति के संतुलित प्रसार का लक्ष्य करना चाहिये।
- सड़के किनारे मुख्य पड़ावों पर बजट आवास व्यवस्था समेत अंतर–राज्य पैकेज टुअर का प्रोत्साहन लाजमी बन जाता है।
- केवल एक राष्ट्रीय नीति ही प्राकृतिक आपदा प्रभावित क्षेत्रों में पर्यटन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने से बचा सकती है।
- पर्यटक स्थानों पर अत्याधिक जनसमूह से बचने और अवनति से बचाने के लिए क्षेत्रीय नीति के स्तर पर कई कदम उठाने चाहिए। निजी उद्यमों के साथ, सामाजिक–धार्मिक स्वैच्छिक सेवाओं में निवेश के रूप में, सहयोग करना चाहिए।
- स्थलों को साफ करवाने के लिए साधारण फीस लेना या प्राचीन स्मारकों के दर्शनार्थ किसी भी समय कहीं भी स्वतंत्र पहुँच के स्थान पर साधारण शुल्क लेना काफी न्यायोचित है।
- नवप्रवर्तक पर्यटन की विधि और उसके नये प्रकार खोजते रहने का प्रयास किसी एक पर्यटन को उसके परिपूर्णता के बिन्दु तक न पहुँचने देने के लिए सबल प्रयत्न हैं।

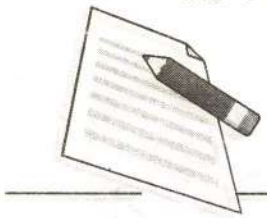

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 32.5

1. उन राज्यों के नाम बताइए जिनके साथ निम्नलिखित राज्य अंतर–राज्य आधार पर एकीकृत टुअर पैकेज आयोजित कर सकते हैं।

   (क) राजस्थान, (ख) केरल, (ग) हिमाचल प्रदेश

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त लेख लिखें:

   (क) ग्रामीण पर्यटन

   (ख) हाट पर्यटन

   (ग) चिकित्सा पर्यटन

3. एपेक्स हवाई टिकट को परिभाषित कीजिए। उसके दो लाभ बताइए।

4. नव प्रवर्तनीय पर्यटन के तीन उदाहरण दीजिए और पर्यटन के उन्नयन के लिए एक नया प्रयत्न बताइए।

आपने क्या सीखा

पर्यटकों के आगमन और विदेशी विनिमय उपार्जन दोनों ही दृष्टिकोण से विश्व पर्यटन में भारत का हिस्सा अभी भी बहुत कम है। विदेशी व्यापार में उपार्जनों के संबंध में पर्यटन हमारी तीसरी सबसे बड़ी निर्यात मद है। पर्यटन उद्योग तीव्र गति और तुलनात्मक रूप से निम्न निवेश द्वारा नये रोजगार सृजित करता है। यह अल्पविकसित क्षेत्रों और पर्वतों पर भौगोलिक रूप से एकान्त क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन अदृश्य उत्पादों के निर्यात को उन्हें भारत से बाहर भेजे बिना बढ़ाता है। उदाहरण के लिए हमारे पर्यटक क्षेत्रों में ठहरने के दौरान पर्यटकों को दिया गया आतिथ्य–सत्कार हमेशा उन्हें याद रहता है। यह इसलिए है क्योंकि विदेशी पर्यटक जो कुछ व्यय करते हैं, हम उससे विदेशी विनिमय कमाते है। इसके अतिरिक्त, वे लोग हमारी बहुत सी सुन्दर हस्तशिल्प वस्तुएं ले जाते है। इसके लिए हमें परिवहन पर कुछ अतिरिक्त खर्च भी नहीं करना पड़ता है, और न ही विज्ञापन देने की आवश्यकता होती है। विदेशी पर्यटकों के ठहरने के दौरान उपार्जित नकद प्रतिकूल व्यापार संतुलन को ठीक करता है। प्राकृतिक वातावरण और विरासत के स्थल तब तक आकर्षण के स्त्रोत बने रहते है जब तक वे नियन्त्रण से परे प्रदूषित या क्षतिग्रस्त नहीं होते हैं। वृहद पर्यटन आवागमन यदि नियमित न किया जाये तो ऐसे खराब प्रभाव उत्पन्न करता है। व्यस्त पर्यटन काल के दौरान स्थानीय लोगों की असुविधाओं को कम करने के लिए सैरगाहों की पर्यटक वहन क्षमता का मिलान करना चाहिए। मेजबान क्षेत्र

टिप्पणी

के युवाओं को भी सांस्कृतिक अलगाव से बचाना चाहिए। वे लोग असावधानी पूर्वक वृहत पर्यटन के समय विदेशियों की जीवन शैली को अंधाधुंध अपनाना शुरू न कर दें, ऐसा ध्यान देने की आवश्यकता है।

नियोजन के लिए एक के बाद एक करके अनेकों कदम उठाने की आज परम आवश्यकता बन गई है। पर्यटकों के लिए जरूरी सेवाओं एवं सुविधाओं की विद्यमान स्थिति का सर्वेक्षण, स्वास्थ्यपूर्ण और वहनीय पर्यटन के विकास के प्रयत्नों का सर्वेक्षण आदि।

राष्ट्रीय स्तर के उच्चतम प्रकाय को पड़ोसी देशों की तुलना में पर्यटन की स्थिति व प्रवृत्तियों का ज़ायजा लेना चाहिए। यह भावी आवश्यकताओं, पर्यटकों को लुभाने के लिए विभिन्न प्रोत्साहनों का मूल्यांकन करने में मदद करेगा। पर्यटन के लिए बुनियादी ढ़ांचे के संचालन और व्यवस्था की कमी को दूर करके इसे आकर्षक बनाया जा सकता है।

एकमात्र राष्ट्रीय नीति ही एकीकृत अन्तर–राज्य परिधि टुअर आयोजित करने के लिए नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम है। यह देश में पर्यटन के प्रसार में असंतुलनों को कम करने में मदद करता है। प्राकृतिक आपदा, जैसे सुनामी से व्यापक रूप से क्षतिग्रस्त प्रसिद्ध पर्यटक क्षेत्रों का तेजी से पुनर्वास करने में मदद करती है।

पर्यटन स्थलों का सतत आकर्षण बनाये रखने और पर्यटकों को स्थानीय क्षेत्रों में पहुँचाने हेतु स्थान संबद्धता को सुधारने के लिए क्षेत्रीय पुनरावलोकन की जरूरत होती है। पूर्ण पैमाने का प्रचार प्रयत्न बहुत अहम होता है। इससे पर्यटकों को जागरूक बनाया जा सकता है कि क्षेत्र में क्या देखने लायक है और स्थानीय लोगों को जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे अपने प्राकृतिक दृश्य विरासत और कौशलों के उचित विपणन का ध्यान रख सकें। स्थानीय पर्यटन क्षेत्रों में सभी स्तरों पर पेशेवर मध्यस्थों की सतत आपूर्ति को पर्यटन के उन्नयन के हित में उपेक्षित नहीं किया जा सकता है।

पर्यटन हेतु ज्यादा स्थल विकसित करने और नवप्रवर्तनीय प्रयत्न बताने के लिए क्षेत्रीय संगठन ज्यादा सक्षम है। जैसे मानवीय पर्यटन के नवीन रूप का प्रतिष्ठापन यह आगन्तुक एवं मेजबान समुदाय दोनों की पसन्द थे। क्षेत्रीय पर्यटन को परिपूर्णता के बिन्दु है तक पहुँचने से बचाने के लिए नवप्रवर्तन वर्तमान की जरूरत हैं। अन्यथा पर्यटन उस क्षेत्र विशेष में मृत–सा हो जाएगा।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्नलिखित का संक्षेप में उत्तर दीजिए–

   (क) पर्यटन द्वारा सृजित रोजगार, कृषि या औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार की तुलना में ज्यादा पसन्द क्यों किए जाते हैं?

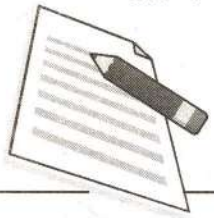

टिप्पणी

(ख) मेहमान पर्यटकों और मेजबान समुदाय के सदस्यों के बीच तीन तरीकों से होने वाले आमना–सामना को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

(ग) पर्यटन अविकसित क्षेत्र से लोगों के प्रवास को रोकने में किस प्रकार मदद करता है?

2. निम्नलिखित के बीच संक्षेप में अन्तर कीजिए:

(क) अदृश्य और दृश्य निर्यात

(ख) सततवाही पर्यटन और पारिस्थितिकी पर्यटन।

3. भारत में पर्यटक आगमन में वृद्धि के लिए आवश्यक पांच मुख्य प्रयत्नों को बताइए।

4. निम्नलिखित कथन की चर्चा करिए:

"पर्यटन अपनी मांग स्वयं सृजित करता है और साथ ही साथ अन्य उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करता है।"

5. पर्यटन के लिए भ्रमण के बुनियादी ढ़ांचे का क्या महत्व है?

6. निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए:

(i) देशी पर्यटन बाजार नकद भुगतान के लिए हमेशा तैयार रहता है।

(ii) पर्यटन उद्योगों का समूह है।

7. स्पष्ट कीजिए, किस प्रकार सुनामी लहरों ने हमारे पुलिन पर्यटन को पूर्णतया नष्ट कर दिया था?

8. विकसित पर्यटन के क्षेत्र और अल्प मूल्यांकित पर्यटन क्षेत्र के एक एक उदाहरण दीजिए।

9. निम्नलिखित को एक वाक्य में परिभाषित करें:

(क) एकक पथ पर्यटन

(ख) हाट पर्यटन

(ग) ग्रामीण पर्यटन,

(घ) मानवीय पर्यटन

(ङ) क्षेत्र चयनात्मक पर्यटन

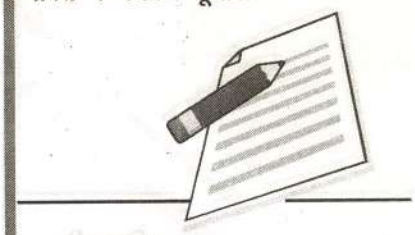

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

1. अनुच्छेद 32.2 को देखिए।
2. 2004 के विश्व के आंकड़ों के संबंध में पर्यटक आगमनों के आधा प्रतिशत का एक–तिहाई थाइलैंड और मलेशिया में था। उनका 25% पाकिस्तान और बंगलादेश से भारत में अपने रिश्तेदारों के साथ ठहरे।

32.2

1. (क) पर्यटक के लिए आतिथ्य सरकार सेवायें, (ख) होटलों में दीर्घकालीन ठहरने की सुविधाएं।
2. अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक
3. पर्यटन के द्वारा ज्यादा पैसा और संपन्नता में वृद्धि, बेहतर स्कूल और अस्पताल खोलने और स्त्रियों को सामाजिक रूप से स्वाधीनता की मांग में वृद्धि करती है।
4. समुद्र तटीय रेत, बर्फ और ऊँचे पर्वत पर धूप और गाँवों की हरियाली।
5. क्योंकि यह आनेवाले पर्यटकों द्वारा अपेक्षित और जरूरत की सेवा प्रदान करता है।
6. प्राचीन स्मारक, स्वतंत्रता के बाद के काल में सार्वजनिक निर्माण, 3000 अजायबघर, या चित्रकला/कलात्मक चीजों की प्रदर्शनियाँ।

32.3

1. (क) अपनी स्त्रियों समेत विदेशी पर्यटक का साथ में रहना और स्वच्छंद घूमना। फैशन का यह पागलपन हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाता है।

   (ख) जहाँ जरूरत है वहां मर्यादा के पालन का अभाव

   (ग) स्थानीय युवा सिर्फ आनंद पाने के लिए पैसा खर्च करने की नकल करते हैं। यह अंततः उन्हें अपनी संस्कृति से दूर कर देता है।
2. अनुच्छेद 32.6 (क) देखिए।
3. मन्दिर के ज्यादा समीप हवाई पट्टी से हवाई जहाजों का उतरना या उड़ान भरने से कम्पन्न
4. अनुच्छेद 32.6 (क) और (ग) देखिए।

32.4

1. (क) अनुच्छेद 32.7 देखिए (ख) अनुच्छेद 32.7 देखिए (ग) अनुच्छेद 32.7 देखिए

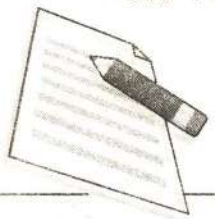

टिप्पणी

2. (क) अनुच्छेद 32.7 देखिए (ख) अनुच्छेद 32.7 देखिए

32.5

1. (क) राजस्थान और गुजरात

   (ख) केरल और तमिलनाडु

   (ग) हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर और उत्तराखंड

2. (क) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (ii) देखिए

   (ख) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (v) देखिए

   (ग) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (vii) देखिए

3. अनुच्छेद 32.8 (क) देखिए

4. अनुच्छेद 32.9 देखिए

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. (क) अनुच्छेद 32.3 देखिए

   (ख) अनुच्छेद 32.6 (ग) का भाग (i) से (iii) देखिए

   (ग) अनुच्छेद 32.5 देखिए

2. (क) अनुच्छेद 32.4 देखिए (ख) अनुच्छेद 32.9 (ख) देखिए

3. हवाई या रेल यात्रा सेवाओं की व्यवस्था, पर्यटक रूचि के सभी स्थानों में उनके तन्त्र को बनाए रखना व उसका विस्तार; यात्रियों के भिन्न वर्गों के लिए किराये में कटौती व रियायतें; परिधि पर्यटन व्यवस्था की संभावना; यात्रा के दौरान होटलों व पर्यटक स्थलों पर आतिथ्य सत्कार सेवाएं प्रदान करने की पेशवर मध्यस्थों की व्यवस्था; विविध प्रकार के नवप्रवर्तनीय पर्यटन का विकास और पर्यटक विशेष क्षेत्र में बहुविध आकर्षण की विद्यमानता।

4. अनुच्छेद 32.3 और अनुच्छेद 32.4 देखिए।

5. अनुच्छेद 32.3 और अनुच्छेद 32.7 (ब) देखिए अनुच्छेद 32.8 (क) का 1–2 पैरा देखिए और निम्नलिखित पंक्तियां शामिल करें: समान की शीघ्र निकासी और हवाई अड्डों पर कानूनी औपचारिकताओं का सरलीकरण जैसे वीज़ा या यात्रा करने वाले पर्यटकों का प्रवास/आप्रवास। यह सहायता पर्यटकों को अनावश्यक परेशानी से बचाती है।

6. (क) अनुच्छेद 32.1 और अनुच्छेद 32.3 देखिए। (ख) अनुच्छेद 32.3 देखिए।

7. अनुच्छेद 32.8 (ग) देखिए।

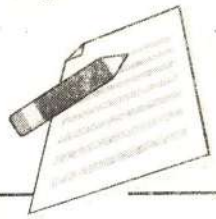

टिप्पणी

8. अनुच्छेद 32.8 (ख) देखिए।

9. (क) अनुच्छेद 32.9 (ख) का पहला पैरा देखिए।

   (ख) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (v) देखिए।

   (ग) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (i) देखिए।

   (घ) अनुच्छेद 32.9 (ख) का भाग (vii) देखिए।

   (ङ) अनुच्छेद 32.9 (क) देखिए।